INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

REET

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION
2022

2 LEVEL

HANDWRITTEN NOTES

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

भाग-4 (A) सामाजिक अध्ययन (पार्ट – 1)

whatsapp- https://wa.link/cptty4 1website-https://bit.ly/reet-level-2-sst-notes

सामाजिक अध्ययन

भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं समाज

1. सिन्धु घाटी सभयता
2. वैदिक संस्कृति
3. जैन व बौद्ध धर्म
4. महाजनपद काल
5. मौर्य काल
6. गुप्त साम्राज्य एवं गुप्तोत्तर काल
7. भारत 600 -1000 ईस्वी. वृहत्तर भारत
8. राजनीतिक इतिहास एवं भारतीय संस्कृति

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

मध्यकाल एवं आधुनिक काल

1. भक्ती और सूफी आन्दोलन
2. मुगल - राजपूत संबंध

3. मुगल प्रशासन

4. भारतीय राज्यों के प्रति ब्रिटिश नीति

- भरतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश प्रभाव

5. 1857 का विद्रोह

6. पुनर्जागरण एवं सामाजिक सुधार

7. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन (1885-1947)

भारतीय संविधान एवं लोकतंत्र

1. भारतीय संविधान का निर्माण

2. विशेषतायें

3. उद्देशिका

4. संघ एवं इसका राज्य क्षेत्र

5. मौलिक अधिकार

6. नीति निदेशक तत्त्व

7. मूल कर्त्तव्य

8. सामाजिक न्याय

९. बाल अधिकार व बाल संरक्षण

10.लोकतंत्र में निर्वाचन व मतदाता जागरूकता

सरकार - गठन एवं कार्य

11. संसद

12. राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति

13. प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद

14. उच्चतम न्यायालय

15. राज्य सरकार (राज्यपाल , मुख्यमंत्री , महाधिवक्ता , विधानमंडल , उच्च न्यायालय इत्यादि)

16. पंचायती राज एवं नगरीय स्व-शासन (राजस्थान के विशेष संदर्भ में)

17.जिला प्रशासन व न्याय व्यवस्था

18. अन्य महत्वपूर्ण वन लाइनर तथ्य

• पृथ्वी एवं हमारा पर्यावरण

1. अक्षांश, देशान्तर

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

2. पृथ्वी की गतियां

3. वायुदाब एवं पवनें

4. चक्रवात एवं प्रति चक्रवात

5. सूर्य एवं चन्द्रग्रहण

6. पृथ्वी के मुख्य जलवायु कटिबन्ध

7. जैवमंडल, पर्यावरणीय समस्याएँ एवं समाधान

- **भारत का भूगोल**

1. सामान्य परिचय

2. भू-आकृति प्रदेश

3. नदियाँ एवं झीलें

4. जलवायु

5. प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य जीवन

6. बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाएं

7. मृदा

8. कृषि फसलें

9. उद्योग

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

10. खनिज एवं ऊर्जा संसाधन

11. परिवहन

12. जनसंख्या

13. विकास के आर्थिक एवं सामाजिक कार्यक्रम

14. अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

नोट -

प्रिय छात्रों, Infusion Notes (इन्फ्यूजन नोट्स) के राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) LEVEL – 2 के sample notes आपको पीडीऍफ़ format में "फ्री" में दिए जा रहे हैं और complete Notes आपको Infusion Notes की website या (Amazon/Flipkart) से खरीदने होंगे जो कि आपको hardcopy यानि बुक फॉर्मेट में ही मिलेंगें, या नोट्स खरीदने के लिए हमारे नंबरों पर सीधे कॉल करें (8504091672, 8233195718, 9694804063) | किसी भी व्यक्ति को sample पीडीऍफ़ के लिए भुगतान नहीं करना है | अगर कोई ऐसा कर रहा है तो उसकी शिकायत हमारे Phone नंबर 8233195718, 0141-4045784 पर करें, उसके खिलाफ क़ानूनी कार्यवाई की जाएगी |

SAMPLE

भारतीय सभ्यता , संस्कृति एवं समाज

अध्याय – 1

सिन्धु घाटी सभ्यता

इतिहास का अध्ययन : -

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल -

- वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जातीहैं।
- मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल -

आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिस के लिखित स्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिंधु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ान हीं गया है इसलिए इसलिए सभ्यता को आद्यऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं। इस काल की लिपि को सर्पीलाकार लिपिक हते हैं क्योंकि सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी। इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं ।इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की है। राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगाकी सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसमें लिखित स्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे वैदिक का लजि समेंवेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी ।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया क्योंकि सबसे पहले 1921 में हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी द्वारा की गई थी।

इस सभ्यता को निम्न अन्य नामों से भी जाना जाता है →

- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया
- सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया
- वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा गया
- प्रथम नगरीय क्रान्ति- गार्डन चाइल्ड के द्वारा कहा गया
- सरस्वती सभ्यता के द्वारा कहा गया
- मेलूहा सभ्यता के द्वारा कहा गया
- कांस्यकालीन सभ्यता के द्वारा कहा गया

- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते है।
- 1902 में लार्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हडप्पा की खोज की।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

- 1922 में राखालदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों की खोज की।
- 20 सित० 1924 को जॉन मार्शल ने द इलस्ट्रेटेड लन्दन न्यूज' के माध्यम से इस सभ्यता की खोज की घोषणा की।

- **सिन्धु सभ्यता की प्रजातिया--**
  - प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
  - भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ो की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक
  - मंगोलियन - मोहनजोदडो से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की
  - अल्पाइन

- **<u>सिन्धु सभ्यता की तिथि</u>**

कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.

हिलेर - 2500-1700 ई.पू.

मार्शल- 3250-2750 ई.पू.

<u>सभ्यता का विनाश</u>

नदी के बाद के कारण
- मार्शल
- मैके
- एस.आर.राव

बाहय आक्रमण
- गार्डन चाइल्ड
- हीलर
- पिगट

जलवायु परिवर्तन
- ए.एन.ष
- आरेल स्टीन

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्राकृतिक आपदा - केन्यू. आर. कनेडी

इस सभ्यता का विस्तार→

- इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान और भारत में ही मिलता है।

पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट

- **सुत्कांगेडोर**- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है। इसकी खोज आरेल स्टाइन ने की थी।
- सुत्कांगेडोर को हडप्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते हैं।

मोहनजोदडो	हडप्पा
चन्हुदडों	डेराइस्माइल खाँ
कोटदीजी	रहमान टेरी
आमरी	गुमला
अलीमुराद	जलीलपुर

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,

- **हरियाणा-** राखीगढी, सिसवल कुणाल, बणावली, मितायल, बालू
- **पंजाब –** कोटलानिहंग खान चक 86 बाडा, संघोल, टेर माजरा

  रोपड़ (रूपनगर) - स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल
- **कश्मीर** - माण्डा

  चिनाब नदी के किनारे

सभ्यता का उत्तरी स्थल

- **राजस्थान** - कालीबंगा, बालाथल

तरखान वाला डेरा

- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर

सभ्यता का पूर्वी स्थल

- माण्डी

- बड़गांव

- हलास

- सनौली

- **गुजरात**

धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, लोथल,.................

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (98 MARKS)	
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	79 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2^{nd} शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1^{st} शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2^{nd} शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1^{st} शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1^{st} शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1^{st} शिफ्ट)	89 of 160	

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063

FREE SAMPLE

अध्याय – 5

मौर्य काल

- शासन काल चतुर्थ शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. तक (321-185 ई.पू)
- स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) के सहयोग से। (मगध में)
- मौर्य शासन से पहले मगध पर नंद वंश के शासक धनानन्द का शासन था।
- मौर्य राजवंश ने लगभग 137 वर्ष तक भारत में राज किया ।
- राजधानी पाटलिपुत्र (पटना)
- साम्राज्य 5२ लाख वर्ग किलोमीटर तक फैला हुआ था।

आचार्य चाणक्य

- जन्म तक्षशिला में (आचार्य)
- अन्य नाम विष्णुगुप्त, कौटिल्य
- चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री तथा प्रधान पुरोहित आचार्य चाणक्य थे ।
- पुराणों में चाणक्य को "द्विजर्षभ" कहा गया है जिसका मतलब है श्रेष्ठ ब्राह्मण
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद भी बिन्दुसार के समय भी प्रधानमंत्री बना रहा (कुछ समय के लिए)
- चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य रहे थे।
- इन्होंने अर्थशास्त्र नामक पुस्तक की रचना की ।
- अर्थशास्त्र मौर्यकालीन साम्राज्य की राजव्यवस्था एवं शासन प्रणाली पर प्रकाश डालता है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण तथा 180 प्रकरण हैं ।

चन्द्रगुप्त मौर्य

- चन्द्रगुप्त मौर्य ३२२ ई.पू. धनानन्द को हरा कर मगध का शासक बना।
- इसने सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को भी हराया था।
- सेल्युकस की पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ हुआ।
- उपाधियां - पाटलिपुत्रक (पालिब्रोथस)
- भारत का मुक्तिदाता
- प्रथम भारतीय साम्राज्य का संस्थापक

प्रमुख तथ्य : चंद्रगुप्त मौर्य -

· बैक्ट्रिया के शासक सेल्यूकस को चंद्रगुप्त ने पराजित कर उसकी पुत्री से विवाह किया तथा दहेज में हेरात, कंधार, मकरान तथा काबुल प्राप्त किया।

· सेल्यूकस ने अपने राजदूत मेगास्थनीज को चंद्रगुप्त के दरबार में भेजा था। यूनानी लेखकों ने पाटलिपुत्र को पालिब्रोथा के नाम से संबोधित किया है।

·'चंद्रगुप्त' नाम का प्राचीनतम उल्लेख रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में प्राप्त हुआ है।

· जीवन के अंतिम दिनों में चंद्रगुप्त ने श्रवणबेलगोला में जैन विधि से उपवास पद्धति (संलेखना पद्धति) द्वारा प्राण त्याग दिये।

· चंद्रगुप्त के समय में भूमि पर राज्य तथा कृषक दोनों का अधिकार था।

· आय का प्रमुख स्रोत भूमिकर (भाग) था। संभवतः कर. (Tax) उपज का 1/6 होता था।

· मुद्रा - पंचमार्क या आहत सिक्के।

· इसी के काल से सर्वप्रथम कला के क्षेत्र में पाषाण का प्रयोग किया गया।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

- चंद्रगुप्त जैन धर्म का अनुयायी था

- चंद्रगुप्त मौर्य का प्रधानमंत्री चाणक्य/कौटिल्य था। चाणक्य के बचपन का नाम 'विष्णुगप्त' था।

- इसके शासनकाल के अंत में मगध में भीषण अकाल पड़ा था।

मेगस्थनीज

- मेगस्थनीज सेल्युकस 'निकेटर' का राजदूत था।
- चन्द्रगुप्त के शासन काल में पाटलिपुत्र में कई वर्षों तक रुका।
- इसने 'इंडिका' नामक पुस्तक की रचना की जिससे मौर्यकालीन शासन व्यवस्था की जानकारी मिलती है।
- मेगस्थनीज भारत आने वाला प्रथम राजदूत था।
- जस्टिन-चन्द्रगुप्त की सेना को डाकुओं का गिरोह कहता है।

यूनानियों ने चन्द्रगुप्त को सेंड्रोकोट्स ....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

मध्यकाल एवं आधुनिक काल

अध्याय – 1

भक्ति एवं सूफी आन्दोलन

भक्ति आन्दोलन-

- मध्यकालीन इतिहास का ऐसा दौर जहाँ इस्लाम धर्म हिन्दुओं द्वारा अपनाया जा रहा था, हिन्दू धर्म व समाज की स्थिति का स्तर भी अधोगति की ओर अग्रसर थी। उसी समय भक्ति का विकास हुआ।
- भक्ति आंदोलन हिन्दुओं का सुधारवादी आंदोलन था। इसमें ईश्वर के प्रति असीम भक्ति, ईश्वर की एकता, भाई चारा, सभी धर्मों की समानता तथा जाति व कर्मकांडों की भर्त्सना की गई है। वास्तव में भक्ति आंदोलन का आरंभ दक्षिण भारत में सातवीं से बारहवीं शताब्दी के मध्य हुआ, जिसका उद्देश्य नयनार तथा अलवार संतों के बीच मतभेद को समाप्त करना था। इस आंदोलन के प्रथम प्रचारक शंकराचार्य माने जाते हैं।

इस आन्दोलन के प्रचार हेतु संतो द्वारा दो प्रकार के उपदेश दिए गये-

1. सकारात्मक उपदेश-ईश्वर पर विश्वास और उसकी आराधना पर जोर दिया, गुरुसेवा, भाईचारे व समानता पर जोर दिया गया। लोगों के मन से भेदभाव को दूर करने का प्रयास किया गया।

2. नकारात्मक उपदेश- मूर्ति पूजा, कर्मकांड,यज्ञ,पुरोहित अन्य आडम्बर का विरोध किया गया। छुआछुत का विरोध किया गया। इन उपदेशो के कारण बहुत से प्रभाव दिखे और यह आन्दोलन 6 वीं सदी से 18 वीं सदी तक चलता रहा।

उदभव

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- मुख्य रूप से इन विचारों पर जोर देने वाला आंदोलन भक्ति आंदोलन-भगवान के प्रति समर्पण था । भगवान को भक्ति को मोक्ष के रूप में स्वीकार किया गया था।
- इसका जन्म दक्षिण भारत (शिव-नयनार और वैष्णव-अलवर) में हुआ और बड़े पैमाने पर पूरे भारत (कर्नाटक और महाराष्ट्र से) में बंगाल और उत्तरी भारत में फैल गया।
- अलवार , जिसका शाब्दिक अर्थ है" जो लोग ईश्वर में विसर्जित हैं"वैष्णव कवि-संत थे जिन्होंने विष्णु की प्रशंसा की थी क्योंकि वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर गए थे।
- अलवार की तरह, शिव नयनार कवि प्रभावशाली थे। तिरुमुराई, शिव पर भजनों का संकलन तरेसठ नयनार कवि-संतों द्वारा,शैववाद में एक प्रभावशाली ग्रंथ में विकसित हुआ।

निर्गुण और सगुण

- हिंदू धर्म के भक्ति आंदोलन ने दिव्य (ब्राह्मण) निर्गुणा और सगुना की प्रकृति को छवि करने के दो तरीकों को देखा।
- निर्गुण ब्राह्मण अल्टिमेट रियलिटी की अवधारणा को बिना किसी गुण या गुणवत्ता के निराधार थे। इसके विपरीत, सगुना ब्राह्मण, रूप, गुण और गुणवत्ता के रूप में कल्पना और विकसित किया गया था ।
- यह वहीं ब्राह्मण है, लेकिन दो दृष्टिकोणों से देखा गया है, एक निरुगुनी ज्ञान-फोकस से और सगुनी प्रेम-फोकस से अन्य,गीता में कृष्णा के रूप में एकजुट है।
- निर्गुण भक्त की कविता जानना-श्रेय थी, या ज्ञान में जड़ें थीं। सगुना भक्त की कविता प्रेमा-श्रेयई थी, या प्यार में जड़ें थीं।

➢ **भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत**

रामानुज (12वी.शताब्दी)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

रामानुज कौन थे?

- रामानुज 12 वीं शताब्दी के महान संत थे । भक्ति आंदोलन के प्रारंभिक प्रतिपादक महान वैष्णव गुरु रामानुज थे । उनका जन्म तमिलनाडु राज्य में पेरंबदूर में हुआ था। वे सगुण ईश्वर में विश्वास करते थे।
- रामानुज ने मनुष्य की समानता पर बल दिया और जाति व्यवस्था की भर्त्सना की। रामानुज के क्रिया कलाप का मुख्य केन्द्र काँची और श्रीरंगपट्टम था। किन्तु इनके उपदेशों के प्रति चोल प्रशासन के विरोध के कारण यह स्थान छोड़ना पड़ा।
- रामानुज ने विशिष्टाद्वैत दर्शन का प्रतिपादन किया। भक्ति आंदोलन के दूसरे नायक रामानुज के समकालीन निम्बार्क थे। वे द्वैतवाद दर्शन में विश्वास करते थे तथा ईश्वर के प्रति समर्पण पर बल देते थे।

विशिष्टा द्वैत दर्शन

- रामानुजाचार्य के दर्शन में परम सता के सम्बन्ध में तीन स्तर माने गये हैं- ब्रह्म, चित् और अचित्।
- वस्तुतः ये ब्रह्म, चित्, अचित् ईश्वर से पृथक नहीं हैं बल्कि ये विशिष्ट रूप से ब्रह्म के ही दो स्वरूप हैं एवं ब्रह्म या ईश्वर पर ही आधारित हैं। यही रामनुजाचार्य का विशिष्टाद्वैत का सिद्धान्त है।
- जैसे शरीर एवं आत्मा पृथक नहीं हैं तथा आत्म के उद्देश्य की पूर्ति के लिये शरीर कार्य करता है उसी प्रकार ब्रह्म या ईश्वर से पृथक चित् एवं अचित् तत्त्व का कोई अस्तित्व नहीं हैं। वे ब्रह्म या ईश्वर का शरीर हैं तथा ब्रह्म या ईश्वर उनकी आत्मा सदृश्य हैं।

भक्ति आंदोलन के प्रारंभिक प्रतिपादन महान वैष्णव गुरु रामानुज थे। उनका जन्म तमिलनाडु राज्य में पेरंबदूर में हुआ था। वे सगुण ईश्वर में विश्वास करते थे। उन्होंने मनुष्य की समानता पर बल दिया और जाति व्यवस्था की भर्त्सना की। रामानुज के क्रिया-कलाप

whatsapp- https://wa.link/cptty4 20website-https://bit.ly/reet-level-2-sst-notes

का मुख्य केन्द्र काँची और श्रीरंगपट्टम था। किन्तु इनके उपदेशों के प्रति चोल प्रशासन के विरोध के ....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

FREE SAMPLE

अध्याय – 4

भारतीय राज्यों के प्रति ब्रिटिश नीति

- **अंग्रेज**

भारत आने वाला प्रथम अंग्रेज यात्री जॉन मिल्डेन हॉल था जो स्थल मार्ग से '1597' में आया था।

- भारत में कैप्टन हॉकिन्स '1608 ई०' में समुद्री मार्ग से होकर (Recd Dragon) नामक व्यापारिक जहाज से सूरत बन्दरगाह पर आया।
- होकीन्स प्रथम अंग्रेज था जिसने भारत की भूमि पर समुद्री मार्ग से प्रवेश किया था।
- 1599 ई० में लन्दन में व्यापारियों के एक समूह ने The Governor and company of merchants of trading into the east Indies नामक कंपनी की स्थापना पूर्व के देशों के साथ व्यापार करने हेतु की।
- 31 दिसम्बर 1600 ई० में ब्रिटेन की महारानी एलीजाबेथ प्रथम ने एक शाही फरमान देकर इस कम्पनी को '15 वर्षों' के लिए पूर्व के देशों के साथ व्यापार करने की अनुमति प्रदान की।
- ईस्ट इंडिया कंपनी ने '1608 ई०' में सूरत में एक व्यापारिक कोठी खोली।
- जेम्स प्रथम के एक पत्र के साथ कैप्टन हॉकिन्स को '1608' में भारत भेजा।
- '1609 ई०' में कैप्टन हॉकिन्स बादशाह जहाँगीर से आगरा में मिला था।
- जहाँगीर ने हॉकिन्स को चार सौ का मनसब तथा एक जागीर और 'खान की उपाधि' दी।
- कैप्टन हॉकिन्स तुर्की और फारसी भाषा का ज्ञाता था।
- हाकिन्स ने जहाँगीर से सूरत में एक अंग्रेजी कंपनी खोलने की अनुमति प्रदान कर ली, परन्तु मुगल दरबार में पुर्तगाली प्रतिद्वन्दी सौदाचारों के कारण वह अनुमति शीघ्र ही रद्द कर दी गई।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- '1611 ई०' में हॉकिन्स इंग्लैंड लौट गया।
- '1613 ई.' में जहाँगीर ने अंग्रेजों को सूरत में स्थाई रूप से एक कोठी खोलने की अनुमति दी।
- हॉकिन्स के वापस जाने के बाद '1615 ई.' में जेम्स प्रथम ने सर टॉमस रो को मुगल दरबार में भेजा।
- 10 जनवरी 1616 ई० में टॉमस रो जहाँगीर से अजमेर में मिला था।
- सर टॉमस रो 3 वर्ष तक'राजदूत' के रूप में अजमेर, माण्डू, इलाहाबाद में रहा।
- फरवरी 1619 में सर टॉमस रो इंग्लैंड वापस चला गया।
- 1623 ई० तक अंग्रेजों ने सूरत, भडॉच, अहमदाबाद, मसूली-पट्टनम, आगरा और अजमेर में कोठियाँ स्थापित कर ली थीं।
- 1640 ई० में अंग्रेजों ने मद्रास नगर की स्थापना की और आत्मरक्षा के लिए वहाँ एक दुर्ग का निर्माण कराया और उसका नाम 'सेंट जार्ज का किला' ('फोर्ट सेंट जार्ज) रखा।
- 1651 ई० में बंगाल में व्यापार विस्तार करने के उद्देश्य से ब्रिजमैन के नेतृत्व में हुगली में भी एक कोठी खोली।
- हुगली के बाद कासिम बाजार, पटना तथा राजमहल में अंग्रेजी फैक्ट्रियाँ स्थापित की ।
- 1661 ई० में ही चार्ल्स द्वितीय को पुर्तगाली राजकुमारी केथरीन से विवाह करने के उपलक्ष्य में दहेज के रूप में बम्बई बन्दरगाह मिला था।
- चार्ल्स द्वितीय ने 1668 ई० में बम्बई बन्दरगाह को दस-पोंड वार्षिक किराये पर ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया ।
- बम्बई का वास्तविक संस्थापक 'गेराल्ड आंगियार' को माना जाता है।
- ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना के समय भारत में सम्राट अकबर (1600ई०) का शासन था।
- अंग्रेजो ने हार्मुज बन्दरगाह को पुर्तगालियों से 1604 ई० में जीता था।
- अंग्रेजों को 1632 ई० में गोलकुण्डा के सुल्तान ने सुनहरा-फरमान (Golden farmam) दिया, जिसके मुताबिक 500 पैगोडा सालाना कर देने पर उन्हें गोलकुण्डा राज्य के बन्दरगाहों में व्यापार करने की अनुमति मिली ।

- औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात 1715 में कम्पनी ने मुगल दरबार में जॉन सारमन की अध्यक्षता में एक शिष्ट मण्डल भेजा।
- शिष्ट मण्डल में विलियम हैमिल्टन शल्य चिकित्सक था जिसने फरुखसियर को एक भयंकर रोग से स्वस्थ्य किया।

बंगाल में ब्रिटिश फैक्ट्रियों की स्थापना

- बंगाल के सूबेदार शाहशुजा ने 1651 ई० में एक फरमान जारी कर बंगाल में तीन हजार रुपये वार्षिक कर के बदले व्यापार का विशेषाधिकर 'अंग्रेजों' को प्रदान किय
- 1686 ई० में अंग्रेजों एवं औरंगजेब की भिडन्त हुई (कारण हुगली में अंग्रेजों द्वारा लूट) लड़ाई में अंग्रेजों की हार हुई एवं अंग्रेजों को हुगली छोड़ना पड़ा।
- औरंगजेब ने अंग्रेजों से 1,50,000 रु. हर्जाना लेकर पुनः व्यापार की छूट प्रदान कर दी।

1698 ई० में बंगाल के सूबेदार अजीम-उस-शान ने सूतानती, कोलकाता व गोविंदपुर की जमींदारी अंग्रेजों को सौंप ....

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

whatsapp- https://wa.link/cptty4 24website-https://bit.ly/reet-level-2-sst-notes

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (98 MARKS)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	79 of 150
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	95 of 150
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 of 160

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063

FREE SAMPLE

बंगाल के गवर्नर / फोर्ट विलियम के गवर्नर

गवर्नर, गवर्नर जनरल & वायसराय

गवर्नर जनरल:

ब्रिटिश भारत में 1773ई .से 1857ई .के बीच तेरह गवर्नर जनरल आए। इनके शासनकाल में निमंकित मुख्य घटनाएं एवं विकास हुए-:

- **वारेन हेस्टिंग (1772- 1785)**
- दोहरी शासन प्रणाली]Dual Government System)की समाप्ति)जो बंगाल के गवर्नर)राबर्ट क्लाइव द्वारा शुरू किया गया था(।
- प्रथम गवर्नर जनरल बंगाल का वारेन हेस्टिंग्स था ।
- o 1773 ई. रेग्यूलैटिंग एक्ट ।
- o 1774 ई. में रोहिल्ला युद्ध एवं अवध के नवाब द्वारा रुहेलखण्ड पर अधिकार।
- o 1781 ई. का एक्ट(इसके द्वारा गवर्नर जनरल परिषद एवं कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट न्यायिक अधिकार क्षेत्र का निर्धारण किया गया।
- o 1782 में सालबाई की संधि एवं(1775-82) में प्रथम मराठा युद्ध।
- o 1784 ई. का पिट्स इंडिया एक्ट।
- o द्वितीय मैसूर युद्ध (1780-84)
- o सुरक्षा प्रकोष्ठ या घेरे की नीतिका संबंध (वारेन हेस्टिंग्स एवं वेलेजली)
- o 1785 ई. इंग्लैंड वापसी के बाद हाउस ऑफ लॉर्डस में महाभियोग का मुकदमा चलाया गया।
- o 1784 ई. में सर विलियम जोंस एवं हेस्टिंग्स द्वारा एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाली स्थापना करना।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

लॉर्ड कार्नवालिस -: 1786 -1793 (1805)

- 1790 -92 ई .में तृतीय मैसूर युद्ध।।
- 1792ई .में श्रीरंगपटनम की संधि।
- 1793ई .में बंगाल एवं बिहार में स्थायी कर व्यवस्था जमींदारी प्रथा की शुरुआत।
- 1793ई .मे न्यायिक सुधार,
- विभिन्न स्तरों के कोर्ट की स्थापना
- कर प्रशासन को न्यायिक प्रशासन से अलग करना।
- सिविल सर्विस की शुरूआत।
- प्रशासन तथा शुद्धिकरण के लिए सुधार।
- स्थायी बंदोबस्त प्रणाली को इस्तमरारी,जमींदारी, माल गुजारी एवं बीसवेदारी आदि नाम से भी जाना जाता हैं।

सर जॉन शोर (1793-98):-

- स्थायी बंदोबस्त)1993) को शुरू करने में इन्होने 'राजस्व बोर्ड अध्यक्ष के रुप में महत्वपूर्ण योगदान दिया। लेकिन उनके गवर्नर जनरल काल में कोई महत्त्वपूर्ण घटना नहीं हुई।

लॉर्ड वेलेजली (1798-1805):-

- लॉर्ड वेलेजली 1798 से 1805 तक बंगाल का गवर्नर जनरल रहा। उसके कार्यकाल में अंतिम मैसूर युद्ध लड़ा गया।
- इस युद्ध के बाद मैसूर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन आ गया।
- लॉर्ड वेलेजली के काल में द्वितीय मराठा युद्ध लड़ा गया था जिसमें अंग्रेजों की विजय हुई। यह कंपनी राज के सबसे महत्वपूर्ण युद्धों में से एक था।

- पहले एंग्लो-मराठा युद्ध में मराठों की विजय हुई थी और दूसरे मराठा युद्ध में मराठों की पराजय हुई जिसका कारण मराठों के पास कोई अनुभवी और योग्य शासक न होना था।
- दूसरा मराठा युद्ध 1803 से 1805 तक लड़ा गया जिसके बाद मराठों का राज्य महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों में ही रह गया।
- औरंगाबाद, ग्वालियर, कटक, बालासोर, जयपुर, जोधपुर, गोहाद, अहमदनगर, भरोच, अजंता, अलीगढ़, मथुरा, दिल्ली ये सब अंग्रेजों के अधिकार में चले गए।
- सिंधिया और भोसले ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।
- उसने सहायक संधि की शुरुआत की जिसके तहत भारत के राजा ब्रिटिश सेना और अधिकारी को अपने राज्य में स्वीकार करेंगे, किसी भी विवाद में राजा ब्रिटिश सरकार को स्वीकार करेगा, वो ब्रिटिश के अलावा अन्य यूरोपियों को अपने यहाँ नौकरी पर नहीं रख सकता, इसके अलावा इस संधि में यह भी था कि राजा भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रभुत्व स्वीकार करेंगे।
- लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि को सर्वप्रथम मैसूर के राजा (1799), तंजौर के राजा (1799), अवध के नवाब (1801), पेशवा (1801), बरार के राजा (1803), सिंधिया (1804), जोधपुर, जयपुर, बूंदी और भरतपुर के राजा थे।
- उसने 10 जुलाई 1800 को फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।
- उसने 1799 में सेंसरशिप एक्ट पारित किए जिसका उद्देश्य फ्रांस की मीडिया पर नियंत्रण करना था।

Note:

- सहायक संधि को स्वीकार करने वाला पहला शासक

-अवध का नवाब (1765)

- वेलेजली डी सहायक संधि को स्वीकार करने वाला प्रथम शासक
- हैदराबाद निजाम (1798)

लार्ड मिंटो प्रथम (1807-13):-

- मिंटो के पहल सर जार्ज बार्लो वर्ष)1805-07) के लिए गवर्नर जनरल बना।
- वेल्लोर विद्रोह) 1806)।
- रंजीतसिंह के साथ अमृतसर की संधि) 1809(।
- 1813 ई .का चार्टर एक्ट।

लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-1823)

- लॉर्ड हेस्टिंग्स 1813 से 1823 तक भारत के गवर्नर जनरल रहा। उसके काल में दो महत्वपूर्ण युद्ध गुरखा युद्ध और तृतीय एंग्लो-मराठा युद्ध लड़े गए।
- गुरखा युद्ध 1814 से 1816 तक लड़ा गया जिसमें ईस्ट इंडिया कंपनी की जीत और गोरखों की हार हुई।
- गुरखाओं ने ब्रिटिश कंपनी के क्षेत्र पर आक्रमण किया था, इस कारण गुरखा युद्ध लड़ा गया।
- इस युद्ध में अंग्रेजों की जीत और गुरखाओं की हार हुई जिसके बाद गुरखों को गोरखपुर, सिक्किम और अन्य इलाके कंपनी को देने पड़े।
- इसके अलावा तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध भी लॉर्ड हेस्टिंग्स के समय पर लड़ा गया जिसमें अंग्रेजों की पूर्णतया विजय हुई।
- इस युद्ध के बाद मराठा साम्राज्य का अंत हो गया।
- पेशवा को कानपुर के निकट बिठूर भेज दिया गया और उसे 8 लाख प्रतिवर्ष पेंशन दी गयी। उसके पुत्र नाना साहब पेशवा ने 1857 की क्रांति का कानपुर में नेतृत्व किया।
- राजपूताना के राजाओं ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।

- उसने सेंसरशिप एक्ट को हटा लिया और स्वतंत्र प्रेस को समर्थन दिया।
- उसके काल में समाचार दर्पण नमक समाचार पत्र 1818 में शुरू हुआ।
- 1823 में लॉर्ड हेस्टिंग्स रिटायर हो गया।

लार्ड एमहर्स्ट (1823-28):-

- प्रथम बर्मा युद्ध (1824-26)।
- भरतपुर पर कब्जा (1826)।

लॉर्ड विलियम बैंटिक (1828 -1835)

- लॉर्ड विलियम बैंटिक 1828 से 1835 तक भारत का गवर्नर जनरल रहा। उसका सबसे महत्वपूर्ण कार्य सती प्रथा का अंत था।
- उसके काल में एंग्लो-बर्मा युद्ध के कारण ईस्ट इंडिया कंपनी की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी, उसने कंपनी की आर्थिक स्थिति..........................

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

whatsapp- https://wa.link/cptty4 website-https://bit.ly/reet-level-2-sst-notes

अध्याय – 6

पुनर्जागरण एवं धर्म सुधार

पुनर्जागरण (Renaissance in Europe) का शाब्दिक अर्थ होता है, "फिर से जागना" । चौदहवीं और सोलहवीं शताब्दी के बीच यूरोप में जो सांस्कृतिक प्रगति हुई उसे ही "पुनर्जागरण" कहा जाता है

कथन

- **पं. जवाहरलाल नेहरू** का कथन है कि, "पुनर्जागरण का अर्थ विद्या का पुनर्जन्म तथा कला, विज्ञान और साहित्य तथा यूरोपीय भाषाओं का विकास है।"
- **इतिहासकार स्वेन** का कथन है कि, "पुनर्जागरण से ऐसे सामूहिक शब्द का बोध होता है जिसमें मध्यकाल की समाप्ति तथा आधुनिक काल के प्रारम्भ तक के बौद्धिक परिवर्तनों का समावेश होता है।"
- **प्रो. ल्यूकस** का कथन है कि, "चौदहवीं से सत्रहवीं शताब्दी के बीच में यूरोप में होने वाले महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक परिवर्तनों को 'पुनर्जागरण' कहते हैं।"
- **इतिहासकार डेविस** के अनुसार, "पुनर्जागरण शब्द मानव के स्वातन्त्र्य प्रिय, साहसी विचारों को जो मध्य युग में धर्माधिकारियों द्वारा जकड़े व बन्दी बना दिये गये थे, व्यक्त करता है।"
- **सीमोण्ड** के अनुसार, "पुनर्जागरण एक ऐसा आन्दोलन है, जिसके फलस्वरूप पश्चिम के राष्ट्र मध्य युग से निकल कर वर्तमान युग के विचार तथा जीवन की पद्धतियों को ग्रहण करने लगे हैं।"
- **फिशर का** कथन है कि, "सर्वप्रथम इटली ने नगरों में प्राचीन यूनानी एवं रोमन कला, साहित्य का पुनः सृजन, मानववादी आन्दोलन का प्रारम्भ, स्थापत्य कला एवं चित्रकला का नया स्वरूप, व्यक्तित्व एवं व्यक्तिवादी सिद्धान्तों का विकास, नवीन दृष्टिकोण, वैज्ञानिक तथा ऐतिहासिक आलोचना, छापेखाने का आविष्कार, दर्शन शास्त्र एवं धर्मशास्त्र का नया

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

स्वरूप तथा विवेचन इत्यादि तत्त्वों तथा विशेषताओं को सामूहिक रूप से 'पुनर्जागरण' कहते हैं।

पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएँ -

1. **स्वतन्त्र चिंतन को प्रोत्साहन-** पुनर्जागरण ने स्वतन्त्र चिन्तन की विचारधारा को प्रोत्साहन दिया। अब मनुष्य परम्परागत विचारों और मान्यताओं को तर्क की कसौटी पर कसने लगा। अब मनुष्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उदय हुआ।

2. **व्यक्तित्व का विकास-** पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप मनुष्य को प्राचीन रूढ़ियों, अंधविश्वासों एवं धार्मिक पाखण्डों से मुक्ति मिली। इसके फलस्वरूप मनुष्य के व्यक्तित्व का स्वतन्त्र रूप से विकास हुआ।

3. **मानववादी विचारधारा का विकास-** पुनर्जागरण ने मानववादी विचारधारा का प्रसार किया। अब मनुष्य को यह प्रेरणा मिली कि उसे परलोक की चिन्ता छोड़कर इस जीवन को आनन्द से बिताना चाहिये। धर्म एवं मोक्ष के स्थान पर मानव-जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाना चाहिये।

4. **देशी भाषाओं का विकास-** पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप देशी भाषाओं का अत्यधिक विकास हुआ। अब जन-साधारण की भाषाओं में ग्रन्थ लिखे गए जिसके फलस्वरूप देशी भाषाओं का बहुत अधिक विकास हुआ।

5. **चित्रकला के क्षेत्र में उन्नति-** पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप चित्रकला के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति हुई।

6. ***वैज्ञानिक विचारधारा का विकास-*** *पुनर्जागरण के कारण वैज्ञानिक विचारधारा का भी विकास हुआ। अब सभी विषयों को तर्क एवं विज्ञान की कसौटी पर कसा जाने लगा।*

पुनर्जागरण के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे-

I. धर्म-युद्ध-

- *धर्मयुद्ध (क्रूसेड)- ईसाई धर्म के पवित्र तीर्थ स्थान जेरूसलम के अधिकार को लेकर ईसाइयों और मुसलमानों (सेल्जुक तुर्क) के बीच लड़े गये युद्ध इतिहास में 'धर्मयुद्धों के नाम से विख्यात हैं। ये युद्ध लगभग दो सदियों तक चलते रहे। इन धर्मयुद्धों के परिणामस्वरूप यूरोपवासी पूर्वी रोमन साम्राज्य (जो इन दिनों में बाइजेन्टाइन साम्राज्य के नाम से प्रसिद्ध था) तथा पूर्वी देशों के सम्पर्क में आये।*
- *इस समय में जहाँ यूरोप अज्ञान एवं अन्धकार में डूबा हुआ था, पूर्वी देश ज्ञान के प्रकाश से आलोकित थे।*
- *पूर्वी देशों में अरब लोगों ने यूनान तथा भारतीय सभ्यताओं के सम्पर्क से अपनी एक नई समृद्ध सभ्यता का विकास कर लिया था। इस नवीन सभ्यता के सम्पर्क में आने पर यूरोपवासियों ने अनेक वस्तुएं देखीं तथा उन्हें बनाने की पद्धति भी सीखी।*
- *इससे पहले वे लोग अरबों से कुतुबनुमा, वस्त्र बनाने की विधि, कागज ओर छापाखाने की जानकारी प्राप्त कर चुके थे।*
- *इन धर्म-युद्धों के कारण यूरोपवासियों को पूर्वी देशों की तर्क-शक्ति, प्रयोग पद्धति तथा वैज्ञानिक खोजों की पर्याप्त जानकारी प्राप्त हुई। उन्हें प्राचीन यूनानी तथा रोमन विद्वानों की पुस्तकें पढ़ने का अवसर मिला। जिससे उन लोगों के ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि हुई।*
- *धर्म-युद्धों के कारण यूरोप के पूर्वी देशों से व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हुए। यूरोप के अनेक साहसी लोगों ने पूर्वी देशों की यात्राएँ की तथा अपनी यात्राओं के विवरण लिखे, जिन्हें पढ़ने से यूरोपवासियों के संकीर्ण विचार समाप्त हुए तथा उनके ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि हुई।*

- धर्मयुद्धों के परिणामस्वरूप यूरोपवासियों को नवीन मार्गों की जानकारी मिली और यूरोप के कई साहसिक लोग पूर्वी देशों की यात्रा के लिए चल पड़े। उनमें से कुछ ने पूर्वी देशों की यात्राओं के दिलचस्प वर्णन लिखे, जिन्हें पढ़कर यूरोपबासियों की कूप-मंडूकता दूर हुई।
- मध्ययुग में लोग अपने सर्वोच्च धर्माधिकारी पोप को ईश्वर का प्रतिनिधि मानने लगे थे। परन्तु जब धर्मयुद्धों में पोप की सम्पूर्ण शुभकामनाओं एवं आशीर्वाद के बाद भी ईसाइयों की पराजय हुई तो लाखों लोगों की धार्मिक आस्था डगमगा गई और वे सोचने लगे कि पोप भी हमारी तरह एक साधारण मनुष्य मात्र है।

2. पूर्व से सम्पर्क-

पूर्वी देशों के सम्पर्क में आने से यूरोपवासी अत्यधिक प्रभावित हुए। अरब लोग स्वतन्त्र रुप से चिंतन करते थे। उन्हें अरस्तू, प्लेटो आदि की पुस्तकों का भी ज्ञान था। इस प्रकार अरब लोगों ने यूर पियनों का ध्यान यूनानी दर्शन, ज्ञान-विज्ञान आदि की ओर आकर्षित किया । यूरोपियन लोगों ने अरबों तथा चीन से कुतुबनुमा, बारुद, कागज, छापेखाने आदि की जानकारी प्राप्त की। इस प्रकार पूर्वी देशों के सम्पर्क में आने से यूरोपवासियों में स्वतन्त्र चिंतन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि की भावनाएँ उत्पन्न हुईं।

3. मंगोलों का योगदान-

- 13वीं शताब्दी में मंगोल नेता कुबलई खाँ ने एक विशाल मंगोल साम्राज्य थापित किया। कुबलई खाँ ने अपने दरबार में अनेक विद्वानों, साहित्यकारों, धर्म प्रचारकों, राजदूतों आदि को संरक्षण दे रखा था। इटली का प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो भी उसके दरबार में पहुंचा था। चीन से लौटकर उसने अपनी यात्रा का रोचक वर्णन लिखा। इस वर्णन से यूरोपवासियों को नये-नये देशों की खोज करने तथा अपनी संस्कृति को विकसित करने की प्रेरणा मिली।
- प्रसिद्ध यात्री कोलम्बस भी कुबलई खाँ के दरबार में पहुंचा। उसने कुबलई खाँ से प्रभावित होकर समुद्री यात्रा के लिए प्रस्थान किया। अरबों तथा मंगोलों के सम्पर्क से

यूरोपवासियों को छापाखाना, कुतुबनुमा, बारूद, कागज आदि की जानकारी हुई। इन चीजों की जानकारी ने यूरोपवासियों के दृष्टिकोण में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया।

- यूरोप के बहुत से देशों विशेषकर स्पेन, सिसली और सार्डिनिया में अरबों के बस जाने से पूर्व यूरोपवासियों को बहुत सी बातें सीखने को मिलीं। अरब लोग स्वतन्त्र चिन्तन के समर्थक थे और उन्हें यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिकों प्लेटो तथा अरस्तु की रचनाओं से विशेष लगाव था।
- ये दोनों विद्वान् स्वतंत्र विचारक थे और उनकी रचनाओं में धर्म का कोई सम्बन्ध न होता था। अरबों के सम्पर्क से यूरोपवासियों का ध्यान भी प्लेटो तथा अरस्तु की ओर आकर्षित हुआ। तेरहवीं सदी के मध्य में कुबलाई खाँ ने एक विशाल मंगोल साम्राज्य स्थापित किया और उसने अपने ही तरीके से यूरोप और एशिया को एक-दूसरे से परिचित कराने का प्रयास किया। उसके दरबार में जहाँ पोप के दूत तथा यूरोपीय देशों के व्यापारी एवं दस्तकार रहते थे, वहीं भारत तथा अन्य एशियाई देशों के विद्वान् भी रहते थे।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

४. नगरों का विकास-

व्यापार के विकास के कारण यूरोप में नगरों का विकास हुआ। व्यापारी लोग नगरों में रहने लगे। नगरों के विकास के कारण व्यापारी लोग धनवान बनते चले गये। इन्होंने अपने रहने के निवास स्थानों को सुन्दर चित्रों एवं मूर्तियों से सुसज्जित करवाया। नगरों के निवासी स्वतन्त्र वातावरण को पसन्द करते थे तथा कठोर ....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि

आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

भारतीय संविधान एवं लोकतंत्र

अध्याय – 5

मौलिक अधिकार

- भारत के संविधान के भाग तीन में अनु. 12 से 35 तक में मौलिक अधिकारों से सम्बन्धित प्रावधान है।
- मौलिक अधिकारों की अवधारणा को U.S.A (अमेरिका) से अपनाया गया है। भारत की व्यवस्था में मौलिक अधिकारों के निम्नलिखित महत्व हैं ।

1. मौलिक अधिकारों के माध्यम से राजनीतिक एवं प्रशासनिक लोकतंत्र की स्थापना होती है। अर्थात कोई भी नागरिक प्रत्यक्ष अथवा अ प्रत्यक्ष रूप में राजनीति में भागीदारी कर सकता है और प्रत्येक नागरिक अपनी योग्यता के आधार पर प्रशासन् का हिस्सा बन सकता है।
2. मौलिक अधिकारों के माध्यम से सरकार की तानाशाही अथवा व्यक्ति विशेष की इच्छा पर नियंत्रण स्थापित होता है।
3. मौलिक अधिकारों के माध्यम से व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं सुरक्षा स्थापित होती हैं ।
4. मौलिक अधिकारों के माध्यम से विधी के शासन् की स्थापना होती है।
5. मौलिक अधिकारों के माध्यम से अल्पसंख्यक और दुर्बल वर्ग को सुरक्षा प्राप्त होती है।
6. मौलिक अधिकारों के माध्यम से पंथनिरपेक्ष राज्य की अवधारणा को सुरक्षा प्राप्त होती हैं और इसको बढ़ावा मिलता है।
7. मौलिक अधिकार सामाजिक समानता एवं सामाजिक न्याय यात्रा की स्थापना करते हैं।
8. मौलिक अधिकारों के माध्यम से व्यक्ति की गरिमा एवं सम्मान की रक्षा होती है।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

9. मौलिक अधिकार सार्वजनिक हित एवं राष्ट्र की एकता को बढ़ावा देते है।

- मौलिक अधिकार न्यायालय में वाद योग्य हैं । अर्थात मौलिक अधिकारों का उल्लंघन होने पर सुरक्षा के लिए न्यायालय में अपील की जा सकती है।

(I) समता का अधिकार :- (अनु० 14-18)

विधि के समक्ष एवं विधियों का समान संरक्षण-

- संविधान के अनु० 14 में विधि के समक्ष समता एवं विधियों के समान संरक्षण का प्रावधान हैं । विधी के समक्ष समता की अवधारणा ब्रिटेन से प्रभावित हैं । विधी के समक्ष समता से आशय हैं, विधी सर्वोच्च होगी। और कोई भी विधिक व्यक्ति विधी से ऊपर नही होगा।

विधि के समक्ष समता के सिद्धांत के भारत के संबंध में निम्नलिखित अपवाद है।

I. भारत का राष्ट्रपति अथवा राज्यों के राज्यपाल पर पद पर रहते हुए किसी भी प्रकार का आपराधिक मुकदमा नही चलाया जाएगा।

II. राष्ट्रपति अथवा राज्यपाल के इन पदों पर रहते हुए लिए गए निर्णयों के सम्बन्ध में न्यायालय में प्रश्नगत नही किया जायेगा ।

III. संसद अथवा राज्य विधानमंडल के सदस्यों को सदन की कार्यवाही के आरम्भ होने के 40 दिन पूर्व तथा कार्यवाही के समाप्त होने के 40 दिन बाद तक किसी दीवानी मामले में न्यायलय में उपस्थित होने के लिए बाध्य नही किया जायेगा ।

IV. विदेशी राजनयिक अथवा कूटनीतिज्ञ फोजदारी मामलो एवं दीवानी मामलो से मुक्त होंगे ।

V. अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे – UNO, ADB, WB, IMF आदि के अधिकारी एवं कर्मचारी दीवानी एवं फौजदारी मामलो से मुक्त होंगे ।

कुछ आधारो पर विभेद का प्रतिषेद

अनु. 15 में यह प्रावधान हैं कि राज्य किसी नागरिक के साथ केवल धर्म, मूल, वंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान को लेकर विभेद नही करेगा । यह व्यवस्था राज्य और व्यक्ति दोनों पर समान रूप से लागू होती हैं ।

लोक नियोजन के सम्बन्ध में अवसर की समता (अनु०- 16)

अनु. 16 में यह प्रावधान कि राज्य के अधीन किसी भी पद पर नियुक्ति के सम्बन्ध में अवसर की समता होगी। केवल धर्म, वंश, जाति, लिंग तथा जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा।

लेकिन निम्नलिखित मामलो में अवसर की समता के सिद्धांत का उल्लंघन किया जा सकता है –

1. संसद किसी विशेष रोजगार के लिए निवासी की शर्त शामिल कर सकती है। इसी प्रावधान के तहत अनेक राज्यों में राज्य के मूल निवासियों की विशेषाधिकर प्रदान किए गए है।
2. किसी धर्म से संबंधित नियुक्ति के मामले में धर्म विशेष के होने की सीमा लगाई जा सकती है।
3. विशेष वर्ग के लिए अलग व्यवस्था की जा सकती है। जैसे- SC, ST, शैक्षणिक और सामाजिक दृष्टि से पिछड़ा वर्ग तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग तथा कुछ राज्यों में महिलाओ के सम्बन्ध में विशेष प्रावधान है।

अस्प्रश्यता का उन्मूलन (अनु.-17)

संविधान के अनु० 17 में यह प्रावधान है कि अस्पृश्यता_को समाप्त किया जाता है और किसी भी रूप में अस्पृश्यता को बढ़ावा देना दण्डनीय अपराध होगा। इसके संबंध में दंड वह होगा ही संसद विधी द्वारा निर्धारित करें। संविधान में अस्पर्शता के संबंध में विशेष व्यवस्था नही की गई ।

FREE SAMPLE

उपाधियों का अंत (अनु. 18)-

संविधान के अनु. 18 में उपाधियों के सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रावधान है –

(a) राज्य सेवा एवं विद्या को छोड़कर अन्य किसी भी प्रकार की उपाधि प्रदान नही करेगा।

(b) भारत का कोई नागरिक विदेशी राज्य से भी किसी प्रकार की उपाधि प्राप्त नही करेगा।

(c) यदि कोई विदेशी नागरिक राज्य के अधीन लाभ के पद पर कार्यरत हैं तो उसे विदेशी राज्य से उपाधि प्राप्त करने से पहले राष्ट्रपति से अनुमति लेनी होगी।

(d) राज्य के अधीन लाभ के पद पर कार्यरत कोई नागरिक किसी विदेशी राज्य से कोई उपहार अथवा उपलब्धी प्राप्त करता है तो राष्ट्रपति से अनुमति लेनी होगी।

- 1996 में सर्वोच्च न्यायालय ने यह निर्णय दिया था कि पद्म पुरस्कार उपाधि नही हैं, लेकिन इन्हें प्राप्त करने वाला व्यक्ति इनका प्रयोग अपने नाम में उपसर्ग अथवा प्रत्यय के रूप में नही कर सकता।

(2) स्वतन्त्रता का अधिकार

- अनु० 19 (1) में प्रावधान हैं कि राज्य अपने नागरिकों को निम्न स्वतंत्रताए प्रदान करता है ।

वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता :- (अनु. 19(1) A)

इसके अन्तर्गत बोलने एवं किसी भी रूप में अपने विचारो को अभिव्यक्त करना शामिल हैं। जैसे –

(a) सरकार के कार्य की प्रसंशा करना ।

(b) सरकार के कार्यो की आलोचना करना ।

(c) समाचार पत्र का प्रकाशन करना।

(d) दैनिक, साप्ताहिक, मासिक आदि पत्रिकाएं निकालना।

(e) न्यूज चैनल चलाना।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

(f) फिल्म का प्रसारण करना ।

(g) अपने उत्पाद का विज्ञापन करना ।

(h) किसी प्रकार के राजीतिक बंद अथवा किसी संगठन द्वारा आयोजित बंद का विरोध करना ।

(i) सोशल मीडिया।

शांतिपूर्ण सम्मेलन करने की स्वतंत्रता (अनु. 19(1)B) :-

- किसी भी नागरिक को बिना हथियार के शांतीपूर्ण तरीके से संगठित होने व सम्मलेन करने का अधिकार है।
- इसके तहत नागरिक सार्वजनिक स्थल पर इकट्ठा हो सकते हैं और बैठको में भाग ले सकते हैं।
- लेकिन किसी निजी स्थल पर सम्मेलन का अधिकार नहीं है।

संगम या संघ बनाने का अधिकार –अनु.19 I (c)

- नागरिको को यह अधिकार है कि वह किसी भी प्रकार का संघ अथवा सहकारी समिती बना सकता है।
- इसमें राजनीतिक दल, कम्पनी, साझा क्लब, व्यापार संगठन आदि का निर्माण कर सकते है। और अपने उद्देश्यो को प्राप्त करने का प्रयास कर सकते है ।
- लेकिन संघ बनाने के इस अधिकार पर भी निम्न आधारो पर युक्ति युक्त प्रतिबंध लगाये जा सकते हैं –

(a) भारत की एकता व सम्प्रभुता ।

(b) लोक व्यवस्था ।

(c) सदाचार अथवा नैतिकता ।

भारत के किसी भी क्षेत्र में अबाध संचरण की स्वतंत्रता (अनु. 19(1)d) :-

- इसके तहत नागरिक को अधिकार हैं कि वह भारत के किसी भी भू-भाग में अर्थात एक राज्य से दूसरे राज्य में घूम सकता है। अथवा संचरण कर सकता हैं ।
- यह अधिकार व्यावहारिक रूप में राष्ट्र की एकता व अखंडता को बढावा देता है ।
- एक राज्य के निवासी को दुसरे राज्य में संचरण करने का अधिकार देने से नागरिकों के अन्दर भारतीयता की भावना उत्पन्न होती हैं ।

इस अधिकार पर निम्न आधारो पर युक्ति युक्त प्रतिबंध लगाया जा सकता हैं -

- अनुसूचित जनजाति की सुरक्षा एवं उनके सांस्कृतिक क्रियाकलापों को संरक्षण
- लोक व्यवस्था - इसके सम्बन्ध में सर्वोच्च न्यायालय ने यह निर्णय दिया कि सार्वजनिक नैतिकता के आधार पर वैंश्यावृति में लिप्त, व्यक्ति के संचरण पर प्रतिबंध लगाया जा सकता हैं।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

<u>भारत के किसी भी क्षेत्र में निवास करने अथवा बसने की स्वतंत्रता: अनु. 19 । (e)</u>

- देश के प्रत्येक नागरिक को यह अधिकार है कि वह देश के किसी भी भाग में स्थाई अथवा अस्थाई रूप से बस सकता हैं ।
- पेशेवर अपराधी एवं वैश्यावृति के मामलों में भी इस पर रोक लगाई जा सकती है।

<u>किसी भी प्रकार के व्यवसाय की स्वतंत्रता (अनु.19(1)G)</u> -

- सभी नागरिकों को यह अधिकार है कि वे अपनी इच्छा एवं योग्यता के अनुसार किसी भी प्रकार का व्यवसाय अपना सकते हैं। लेकिन निम्नलिखित मामलो में इस पर युक्ति युक्त प्रतिबंध लगाया जा सकता है।

(i) ऐसा व्यवसाय करना जो गैर क़ानूनी हो अथवा विधी के द्वारा अस्वीकृत हो ।

(ii) समुचित सरकार को यह अधिकार है कि किसी व्यवसाय विशेष के लिए न्यूनतम योग्यता का निर्धारण किया जा सकता है।

(iv) सरकार को यह भी अधिकार है कि किसी समूह अथवा उत्पादक वर्ग अथवा व्यवसायी वर्ग के अधिकारो की सुरक्षा हेतु निश्चित नियम बना सकती है।

अनु. -20 - अपराधो के सम्बन्ध में अथवा दोष सिद्धि के सम्बन्ध में संरक्षण

इसमें प्रावधान हैं कि -

(i) किसी व्यक्ति को तब तक किसी अपराध के सम्बन्ध में दोषी नही ठहराया जायेगा जब तक उसने किसी प्रचलित विधि का उल्लंघन नही किया हो ।

(ii) किसी व्यक्ति को वही दण्ड दिया जायेगा जो अपराध करते समय लागू। अर्थात बाद में बनाई गई विधी के अनुसार व्यक्ति को दण्डित नही किया जायेगा । लेकिन ये केवल आपराधिक मामलों पर ही लागू होता है। सिविल मामलो के ....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (98 MARKS)	
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 of 160	

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें - 8233195718, 8504091672, 9694804063

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

अध्याय – ९

बालकों से सम्बंधित अपराध एवं बाल संरक्षण

बालकों से सम्बंधित अपराध

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो 2015 -16 के अनुसार भारत में बच्चों के प्रति होने वाले अपराध जैसे बाल श्रम, बाल व्यापार, अपहरण, शारीरिक - मानसिक हिंसा, यौन शोषण, बलात्कार आदि के मामलों में लगभग दोगुनी बढ़ोतरी हुई है। ये अपराध घर, स्कूलों, अनाथालयों, आवास गृहों, सड़क, कार्यस्थल, जेल, सुधार गृह आदि किसी जगह पर किसी के भी द्वारा हो सकते हैं। बालकों के साथ अपराध करने वाला, जान - पहचान से लेकर अनजान तक कोई भी हो सकता है।

बाल संरक्षण के लिए बनाए गए कानून निम्नलिखित हैं:

बालक एवं किशोर श्रम (प्रतिषेध एवं विनियम) अधिनियम, 1986 इस अधिनियम की धारा 3 के अनुसार 14 वर्ष तक की आयु वर्ग के बालक से किसी भी प्रकार का खतरनाक एवं गैर खतरनाक कार्य कराना संज्ञेय अपराध है। इनके के हित के लिए बाल श्रम अधिनियम 1986 बनाया गया है।

श्रम मंत्रालय में केन्द्रीय औद्योगिक संबंध तंत्र (सीआईआरएम) इस अधिनियम को लागू करने के लिए जिम्मेदार है। सीआईआरएम मंत्रालय का सम्बद्ध कार्यालय है और इसे मुख्य श्रम आयुक्त (केन्द्रीय) सीएलसी (सी) संगठन के नाम से भी जाना जाता है। सीआईआरएम के प्रमुख आयुक्त (केन्द्रीय) है। इसके अतिरिक्त मौजूदा विनियमों के कार्यान्वयन की समीक्षा करने और कामकाजी बच्चों के कल्याण हेतु उपायों का सुझाव देने के लिए मंत्रालय के अंतर्गत केन्द्रीय बाल श्रम सलाहकार बोर्ड भी गठित किया गया है।

बाल श्रम के ऐसे केस जिसमें बच्चों के बंधुआ मजदूर के सामान स्थिति में पाए जाने पर बाल श्रम से सम्बंधित अपराधों में केस प्रकरण को और मजबूत करने के लिए बंधुआ मजदूर प्रणाली (उन्मूलन) अधिनियम 1976 को भी लगाया जाता है।

खतरनाक क्षेत्रों में बाल श्रमिक नियोजित कराएँ जाने पर धारा – 14 के अंतर्गत दोषी नियोजक को कम से कम 3 माह एवं अधिकतम 1 वर्ष का कारावास तथा कम से कम रूपए 10, 000 एवं अधिकतम रूपए 20, 000 से जुर्माना से दंडित किया जाएँगा ।

बाल श्रम (निषेध एवं नियमन) संशोधन अधिनियम, 2016 के अनुसार बच्चों को दो श्रेणियों में बांटा गया है:

भारतीय संसद ने 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों से श्रम कराने 18 वर्ष तक के किशोरों से खतरनाक क्षेत्रों में कार्य लेने के रोक के प्रावधान वाले बाल श्रम (प्रतिषेध और विनियम) संशोधन विधयेक, 2016 को पारित किया था ।

एक ऐसा व्यक्ति, जिसने 14 वर्ष की आयु पूरी की हो, लेकिन 18 वर्ष की आयु पूरी नहीं की हो, ऐसे बालक को किसी भी खतरनाक जोखिम वाले व्यवसायों या प्रक्रियाओं में काम पर नहीं लगाया जाना चाहिए और खतरनाक कार्य करने की अनुमति भी नहीं देनी चाहिए।

बाल श्रम से जुड़े अनुच्छेद

अनुच्छेद - 23: बालश्रम व मानव व्यापार का निषेध

अनुच्छेद - 21: खतरनाक गतिविधियों में 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों की नियुक्ति निषेध

अनुच्छेद - 34: बालकों के विकास की ....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

अध्याय – 14

उच्चतम न्यायालय

भारत में न्यायपालिका को कार्यपालिका और विधायिका से स्वतंत्र अस्तित्व प्रदान किया गया है। न्यायपालिका की संरचना पिरामिड के आकार की होती है, जिसमें सर्वोच्च स्तर पर सर्वोच्च न्यायालय माध्यमिक स्तर पर उच्च न्यायालय तथा निचले स्तर पर जिला अदालत अदालत होती है।

- 1793 में कार्नवालिस के शासनकाल में निचली अदालतों का गठन किया गया।
- 1861 में इंडियन काउंसलिंग एक्ट के अनुसार पहली तीन उच्च न्यायालय का गठन किया गया।
- 1935 में गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट के तहत फेडरल कोर्ट का गठन किया गया। यही वर्तमान सर्वोच्च न्यायालय है। इन अदालतों की दंड प्रणाली एवं कार्य प्रणाली ब्रिटिश काल में ही निर्मित हो गई थी
- 1860 में आईपीसी इंडियन पैनल कोर्ट का गठन हुआ। 1862 में से लागू कर दिया गया।
- 1908 में सिविल प्रोसेशन कोर्ट अस्तित्व में है।
- 1973 में क्रिमिनल कोर्ट प्रोसेशन कोर्ट अस्तित्व में आई।
- भारत में उच्चतम न्यायालय सर्वोच्च न्यायालय का उद्घाटन 28 जनवरी 1950 को हुआ। (सर्वोच्च न्यायालय)
- सशस्त्र सेना न्यायाधिकरण अधिनियम 2007 के प्रावधान के अनुसार कोर्ट मार्शल की अपील सुप्रीम कोर्ट में की जा सकती है।
- भारत के सुप्रीम कोर्ट में न्यायाधीशों की संख्या में वृद्धि करने की शक्ति सांसद की है।
- भारतीय न्यायपालिका को स्थिति U.S.A. एवं U.K. के मध्य में है।
- U.S.A. में न्याय सर्वोच्चता की स्थिति है।
- फेडरल कोर्ट संसद से अधिक शक्तिशाली है।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

- U.K. में संसदीय संप्रभुता की स्थिति है। संसद, न्यायपालिका की स्थिति में श्रेष्ठ है। भारत में संसदीय संप्रभुता और न्याय व्यवस्था के मध्य की स्थिति को अपनाया गया।
- संविधान के दायरे में दोनों ही शक्तिशाली है।

भारतीय सर्वोच्च न्यायालय (आर्टिकल -124)

- 1773 में रेगुलेटिंग एक्ट के आधार पर कोलकाता में एक सुप्रीम कोर्ट की स्थापना की गई, परंतु वर्तमान में सुप्रीम कोर्ट 1935 के फेडरल कोर्ट का उत्तराधिकारी है। 26 जनवरी 1950 से अस्तित्व में है।
- मूल संविधान में सुप्रीम कोर्ट में एक मुख्य न्यायाधीश तथा सात अन्य न्यायाधीशों का प्रावधान है। वर्तमान में एक मुख्य न्यायाधीश व 30 अन्य न्यायाधीश है। इन न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति के नाम पर की जाती है। परंतु 1993 से ही सुप्रीम कोर्ट का कॉलेजियम निर्णायक भूमिका निभा रहा है।
- इस कॉलेजियम में मुख्य न्यायाधीश के साथ चार वरिष्ठतम न्यायाधीश हैं।
- राष्ट्रपति के द्वारा सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों को शपथ दिलाई जाती है तथा यह अपना त्यागपत्र राष्ट्रपति को ही संबोधित करते हैं।
- सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों की सेवानिवृत्ति के पश्चात भारत में कहीं भी वकालत नहीं कर सकते।
- [जब सुप्रीम कोर्ट किसी व्यक्ति अथवा संस्था को उसके दायित्व के निर्वहन हेतु लेख जारी करता है तो उसे परमादेश (मेंडमस) कहते हैं।]

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की अर्हता (योग्यता)

- किसी उच्च न्यायालय में कम से कम 5 वर्ष तक न्यायाधीश रहा हो।
- किसी उच्च न्यायालय में कम से कम 10 वर्षों तक अधिवक्ता रहा हो।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- राष्ट्रपति की राय में पारंगत विधिवेत्ता रहा हो।
- H. J. Kania सर्वोच्च न्यायालय के पहले मुख्य न्यायाधीश थे।
- K. N. Singh मात्र 18 दिन तक ही मुख्य न्यायाधीश रहे।
- राजेंद्र बाबू मात्र 23 दिन तक ही मुख्य न्यायाधीश रहे।
- Y. V. Chandchurn भारत के सबसे अधिक समय तक सीजीआई थे।
- 1973 में ए. एन. राय को वरिष्ठता क्रम का उल्लंघन करते हुए सीजेआई बनाया गया।
- फातिमा बीवी पहली महिला न्यायाधीश थी। (सुप्रीम कोर्ट)
- अन्य महिला न्यायाधीश है - सुजाता मनोहर, रुमा पाल, ज्ञान - सुधा - मिश्रा, रंजना प्रकाश देसाई।
- अनुच्छेद 122 में न्यायालयों द्वारा संसद की कार्यवाहीयों की जांच ना किया जाना, का प्रावधान है।
- महान्यायवादी, इसे संसद की कार्यवाही में भाग लेने का तो अधिकार है, लेकिन वोट डालने का नहीं।]

महान्यायवादी, जो संसद का ………………………………

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

पृथ्वी एवं हमारा पर्यावरण

अध्याय – 1

अक्षांश व देशान्तर

अक्षांश: भू-पृष्ठ पर विषुवत रेखा या भूमध्यरेखा (Equator) उत्तर या दक्षिण में एक याम्योत्तर (Meridian) पर किसी भी बिन्दु को पृथ्वी के केन्द्र से मापी गई कोणीय दूरी अक्षाश कहलाती है। इसे अंशो मिनटों व सेकेंडों में दर्शाया जाता है। भूमध्यरेखा 0 का अक्षाश है। यह पृथ्वी को दो बराबर भागों में बाँटता है। भूमध्यरेखा से समानान्तर ध्रुव तक दोनों गोलार्द्ध में अनेक वृत्तों का निर्माण होता है।

ये वृत्त 'अक्षांश रेखाएँ' कहलाती हैं। उत्तरी व दक्षिणी गोलार्द्ध में यह 0° से 90° तक पाई जाती है। इस प्रकार 181 अक्षांश रेखाएँ होती हैं। उत्तरी गोलार्द्ध में 231⁄2° N कर्क रेखा (Tropic of Cancer) और 661⁄2°N उत्तरी उपध्रुव वृत्त (Subarctic) तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में 23½ S मकर रेखा (Tropic of Capricorn) और 66½ S दक्षिणी उपध्रुव वृत्त (Sub-Antarctic) कहलाते हैं। प्रत्येक " को अक्षाशीय दूरी लगभग 111 किमी. है, जो पृथ्वी के गोलाकार होने के कारण भूमध्य रेखा से ध्रुवों तक भिन्न-भिन्न मिलती है।

देशान्तर: किसी स्थान की कोणीय दूरी जो प्रधान याम्योत्तर (Meridian) के पूर्व या पश्चिम में होती है, देशान्तर कहलाती है।

प्रधान याम्योत्तर रेखा 0° देशांतर को माना गया है। यह लंदन के ग्रीनविच से होकर गुजरती है। 0° के दोनों ओर 180° तक देशान्तर रेखाएँ होती हैं, जो कुल मिलाकर 360° हैं। जहाँ केवल 0° अक्षांश रेखा पृथ्वी को दो बराबर भागों में बाँटती है, वहीं सभी देशान्तर रेखाएँ यह कार्य करती हैं। इसीलिए इन सभी को महान वृत (ग्रेट सर्किल) कहा जाता है। 1° देशान्तर भूमध्यरेखा पर दूरी 111.32 किमी. है, जो ध्रुवों की ओर कम होती जाती है।

ग्रीनविच रेखा के पूर्व में स्थित 180° तक सभी देशान्तर 'पूर्वी देशान्तर' एवं पश्चिम की ओर स्थित सभी देशान्तर पश्चिमी देशान्तर' कहे जाते हैं। ये क्रमशः पूर्वी गोलार्द्ध एवं पश्चिमी गोलार्द्ध कहलाते हैं। गोलाकार होने के कारण पृथ्वी 24 घंटे में 360" घूम जाती है, अतः 1° देशान्तर की दूरी तय करने में पृथ्वी को 4 मिनट का समय लगता है।

चूंकि सूर्य पूर्व में उदित होता है तथा पृथ्वी पश्चिम से पूर्व अपनी धुरी पर घूम रही है। अतः पूर्व का समय आगे की ओर तथा पश्चिम का समय पीछे रहता है। इसी कारण पृथ्वी के सभी स्थानों पर समय की भिन्नता देखने को मिलती हैं। प्रत्येक 150 देशांतर पर एक घंटे का अंतर होता है। इस प्रकार 0° से 1801 पूर्व की ओर जाने पर 12 घंटे की अवधि लगती है तथा यह ग्रीनविच समय से 12 घंटे आगे होता है। इसी प्रकार 0° से 180° पश्चिम की ओर जाने पर ग्रीनविच समय से 12 घंटे पीछे का समय मिलता है। यही कारण है कि 180° पूर्व व पश्चिम देशान्तर में कुल 24 घंटे अर्थात् एक दिन और रात का अंतर पाया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखाः पृथ्वी पर 180° याम्योत्तर के लगभग साथ-साथ स्थलखंडों को छोड़ते हुए निर्धारित की गई काल्पनिक रेखा, 'अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा' (International Date Line) कहलाती है। साइबेरिया को विभाजित होने से बचाने एवं साइबेरिया को अलास्का से अलग रखने के लिए 75° उत्तरी अक्षांश पर यह पूर्व की ओर मोड़ी गई है। बेरिंग सागर में यह रेखा पश्चिम की ओर मोड़ी गई है। फिजी द्वीप समूह एवं न्यूजीलैंड के विभिन्न भागों को एक साथ रखने के लिए यह रेखा दक्षिणी प्रशांत महासागर में पूर्व दिशा की ओर मोड़ी गई है। अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा के पूर्व व पश्चिम में एक दिन का अंतर पाया जाता है। अतः इसे पार करते समय एक दिन बढ़ाया या घटाया जाता है। जब कोई जलयान अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा को पार कर पश्चिम दिशा में यात्रा करता एक दिन जोड़ दिया जाता है तथा जब पूर्व दिशा में यात्रा करता है तो एक दिन घटा दिया जाता है।

स्थानीय समय (Local Time): यह पृथ्वी पर स्थान विशेष का सूर्य की स्थिति से परिकलित समय है। स्थानीय मध्याह्न समय वह समय है जब सूर्य उस स्थान विशेष पर लम्बवत् चमकता है। भारत के सर्वाधिक पूर्व (अरुणाचल प्रदेश) एवं सर्वाधिक, पश्चिम (गुजरात के द्वारका) में स्थित स्थानों के स्थानीय समय में लगभग दो घंटे को अंतर मिलता है।

मानक समय (Standard Time) किसी देश के मध्य से गुजरने वाली याम्योत्तर का माध्य होता है, जो स्थानीय समय की असुविधा के कारण संपूर्ण देश के लिए लागू माना जाता है। उदाहरण के लिए 82% याम्योत्तर जो कि इलाहाबाद के. निकट नैनी से गुजरती है, का समय संपूर्ण भारत के लिए मानक समय (IST) है। इससे भारत के विभिन्न प्रदेशों में देशान्तरीय अंतर के कारण समय की भिन्नता को समायोजित करने की समस्या से निजात मिल जाती है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

स्थानीय समय की गणना में सहायक कुछ प्रमुख तथ्य

1. 0° देशांतर (ग्रीनविच रेखा) के वायाँ और पश्चिमी देशांतर व दायीं ओर पूर्वी देशांतर होते हैं जबकि 180° देशांतर (अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा) के बायीं ओर पूर्वी देशांतर व दायीं ओर पश्चिमी देशांतर होते हैं।
2. किसी भी देशांतर से जब बायीं ओर जाते हैं तो प्रत्येक 1° देशांतर पर समय में 4 मिनट की कमी आती है, जबकि दावों ओर 4 मिनट की वृद्धि होती है।
3. 180° देशांतर (अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा) के बायीं ओर जाने पर एक दिन जोड़ना पड़ता है, जबकि दायीं ओर एक दिन घटाना पड़ता है।

यदि पृथ्वी के घूर्णन की दिशा उत्क्रमित (Reverse) कर दिया जाए तो......................

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (98 MARKS)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 of 160	

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

अध्याय – 5

सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण

पृथ्वी और चन्द्रमा दोनों को प्रकाश सूर्य से मिलता है। पृथ्वी पर से चन्द्रमा का एक भाग ही दिखता है, क्योंकि पृथ्वी और चन्द्रमा की घूर्णन गति समान है। पृथ्वी पर चन्द्रमा का सम्पूर्ण प्रकाशित भाग महीने में केवल एक बार अर्थात् पूर्णिमा (Full Moon) को दिखाई देता है। इसी प्रकार महीने में एक बार चन्द्रमा का सम्पूर्ण अप्रकाशित भाग पृथ्वी के सामने होता है तथा तब चन्द्रमा दिखाई नहीं देता इसे अमावस्या (New Moon) कहते हैं। जब सूर्य, पृथ्वी और चन्द्रमा एक सरल रेखा में होते हैं तो स्थिति को युति-वियुति (Conjunction) या सिजिगी (Syzygy) कहते हैं, जिसमें युति सूर्यग्रहण की स्थिति में व वियुती(Opposition) चन्द्रग्रहण की स्थिति में बनते हैं। जब पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा के बीच आ जाता है तो सूर्य को रोशनी चन्द्रमा तक नहीं पहुँच पाती तथा पृथ्वी को छाया के कारण उस पर अंधेरा छा जाता है। इस स्थिति को चन्द्रग्रहण (Lunar Eclipse) कहते हैं। चन्द्रग्रहण हमेशा पूर्णिमा की रात को होता है। सूर्यग्रहण की स्थिति तब बनती है, जब सूर्य एवं पृथ्वी के बीच चन्द्रमा आ जाए तथा पृथ्वी पर सूर्य का प्रकाश न पड़कर चन्द्रमा की परछाई पड़े। सूर्यग्रहण (Solar) नहीं लगता एक वर्ष में अधिकतम सात चन्द्रग्रहण एवं सूर्यग्रहण की स्थिति हो सकती है पूर्ण सूर्यग्रहण देखे जाते हैं, परंतु पूर्ण चन्द्र ग्रहण प्रायः नहीं देखा जाता, क्योंकि सूर्य, चन्द्रमा एवं पृथ्वी के आकार में पर्याप्त अंतर है। 22 जुलाई, 2009 को 21वीं सदी का सबसे लंबा पूर्ण सूर्यग्रहण देखा गया। सूर्यग्रहण के समय बड़ी मात्रा में पराबैंगनी (Ultra Violet) किरणें उत्सर्जित होती हैं इसीलिए नंगी आँखों से सूर्य ग्रहण देखने से मना किया जाता है। पूर्ण सूर्यग्रहण के समय सूर्य के परिधीय क्षेत्रों में हीरक वलय (Diamond Ring) की स्थिति बनती है।

ज्वार भाटा (Tide)

सूर्य व चन्द्रमा की आकर्षण शक्तियों के कारण सागरीय जल के ऊपर उठने तथा गिरने को 'ज्वार भाटा' कहा जाता है। इससे उत्पन्न तरंगों को ज्वारीय तरंग कहते हैं। विभिन्न स्थानों पर ज्वार भाटा की ऊँचाई में पर्याप्त भिन्नता होती है, जो सागर में जल की गहराई, सागरीय तट की रूपरेखा तथा सागर के खुले होने या बंद होने पर आधारित होती है। यद्यपि सूर्य चन्द्रमा से बहुत बड़ा है, तथापि सूर्य की अपेक्षा चन्द्रमा की आकर्षण शक्ति का प्रभाव दोगुना है। इसका कारण सूर्य का चन्द्रमा की तुलना में पृथ्वी से दूर होना है।

24 घंटे में प्रत्येक स्थान पर दो बार ज्वार भाटा आता है। जब सूर्य, पृथ्वी तथा चन्द्रमा एक सीधी रेखा में होते हैं तो इस समय उनकी सम्मिलित शक्ति के परिणामस्वरूप दीर्घ ज्वार का ....

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

भारत का भूगोल

अध्याय – 1

सामान्य परिचय

भारत की स्थिति व सीमाओं से सम्बंधित महत्वपूर्ण बिंदु –

- भारत एशिया महाद्वीप का एक देश है, जो एशिया के दक्षिणी भाग में हिन्द महासागर के शीर्ष पर तीन ओर समुद्रों से घिरा हुआ है। पूरा भारत उत्तरी गोलार्द्ध में पड़ता है।
- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6'उत्तरी अक्षांश तक है।
- भारत का देशान्तर विस्तार 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक है।
- भारत का क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी. है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से संसार में भारत का सातवाँ स्थान है। यह रूस के क्षेत्रफल का लगभग 1/5,संयुक्त राज्य अमेरिका के क्षेत्रफल का 1/3 तथा ऑस्ट्रेलिया के क्षेत्रफल का 2/5 है।
- जनसंख्या की दृष्टि से संसार में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है।
- विश्व का 2.4% भूमि भारत के पास है जबकि विश्व की लगभग 17.5% जनसंख्या भारत में रहती है।
- भारत के उत्तर में नेपाल, भूटान व चीन, दक्षिण में श्रीलंका एवं हिन्द महासागर, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार एवं बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिम में पाकिस्तान एवं अरब सागर है। भारत को श्रीलंका से अलग करने वाला समुद्री क्षेत्र मन्नार की खाड़ी
- (Gulf of Mannar) तथा पाक जलडमरूमध्य(Palk Strait) है।
- प्रायद्वीप भारत का दक्षिणतम बिन्दु-कन्याकुमारी है।
- भारत का सुदूर दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेटनिकोबार में है)।
- भारत का उत्तरी अन्तिम बिन्दु- इंदिरा कॉल है ।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

देश की चतुर्दिक सीमा बिन्दु
• दक्षिणतम बिन्दु- इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार द्वीप) • उत्तरी बिन्दु- इन्दिरा कॉल (जम्मू-कश्मीर) • पश्चिमी बिन्दु- सर क्रीक (गुजरात) • पूर्वी बिन्दु-वालांगू (अरुणाचल प्रदेश) • मुख्य भूमि की दक्षिणी सीमा- कन्याकुमारी (तमिलनाडु)

स्थलीय सीमाओं पर स्थित भारतीय राज्य

पाकिस्तान (4)	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू और कश्मीर
अफगानिस्तान (1)	जम्मू और कश्मीर
चीन (5)	जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, सिक्किम,अरुणाचल प्रदेश
नेपाल (5)	उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम
भूटान (4)	सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
बांग्लादेश (5)	पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम

म्यांमार (5)	अरुणाचल प्रदेश,नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम

पड़ोसी देशों के मध्य सीमा विस्तार	
भारत-बांग्लादेश सीमा	4098 किमी.
भारत-चीन	3239किमी.
भारत-पाक सीमा	3310 किमी.
भारत-नेपाल सीमा	1761 किमी.
भारत- म्यांमार सीमा	1643 किमी.
भारत-भूटान सीमा	587 किमी.

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

मुख्य बिन्दु -

- कर्क रेखा (Tropic of Cancer) भारत के बीचों -बीच से गुजरती है।
- भारत को पाँच प्राकृतिक भागों में बाँटा जा सकता है ।
  - उत्तर का पर्वतीय प्रदेश
  - उत्तर का विशाल मैदान
  - दक्षिण का प्रायद्वीपीय पठार
  - समुद्री तटीय मैदान
  - थार का मरुस्थल

भारत का मानक समय (Indian Standard Time) इलाहाबाद के पास नैनी से लिया गया है। जिसका देशान्तर 82°30 पूर्वी देशान्तर है। (वर्तमान में मिर्जापुर) यह ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से 5 घण्टे 30 मिनट ....

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (98 MARKS)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 of 160	

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk8S6W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें I

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063

अध्याय - 3

नदियाँ एवं झीलें

- **नदियाँ -**

भारतीय अपवाह तंत्र

अरब सागरीय अपवाह तंत्र

बंगाल की खाड़ी का

अपवाह तंत्र -

अपवाह तंत्र से तात्पर्य किसी क्षेत्र की जल प्रवाह प्रणाली से हैं अर्थात् किसी क्षेत्र के जल को कौन सी नदियाँ बहाकर ले जाती हैं ।

SAMPLE
INFUSION NOTES

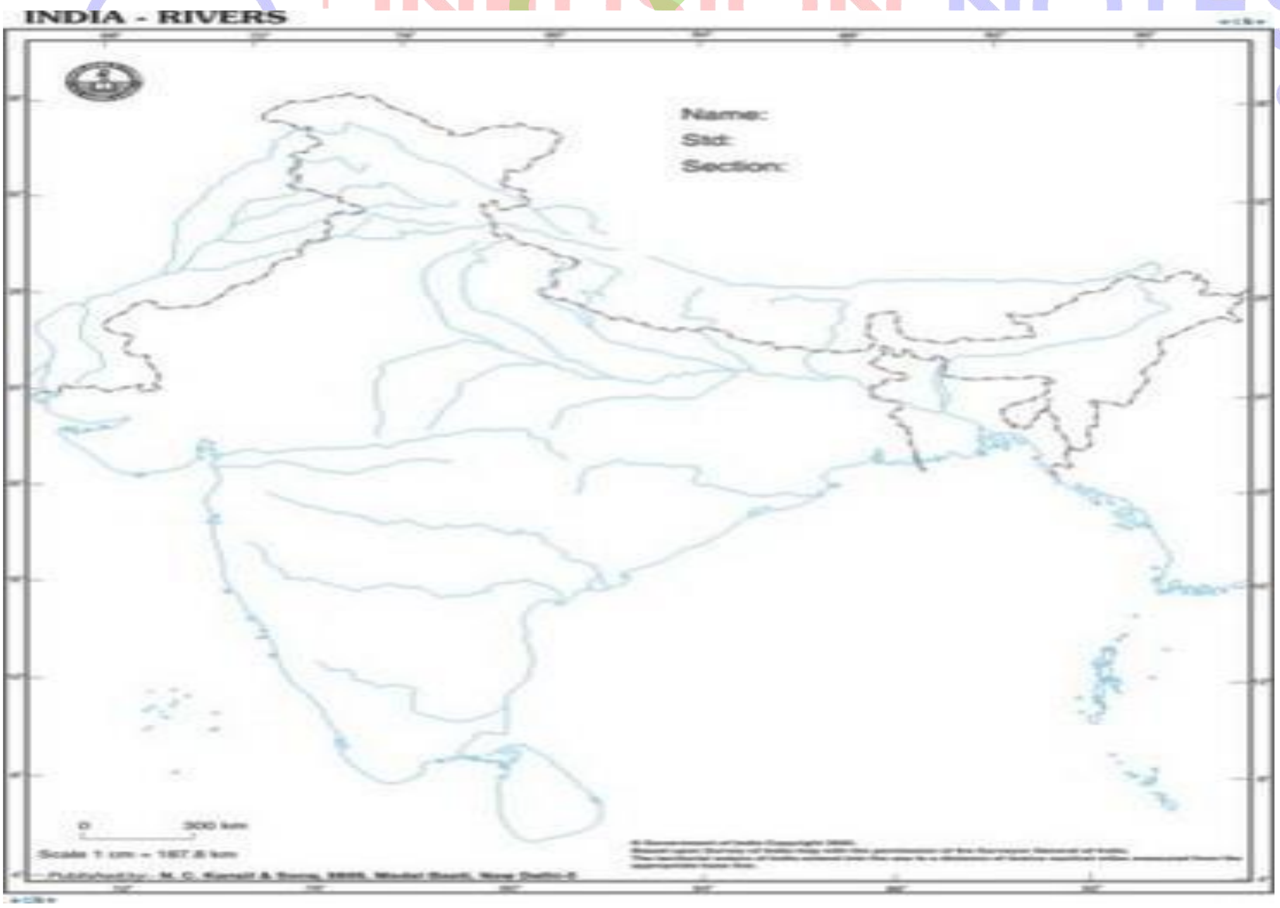

- कुल अपवाह क्षेत्र का लगभग 77 प्रतिशत भाग, जिसमें गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा आदि नदियाँ शामिल हैं । बंगाल की खाड़ी में जल विसर्जित करती हैं,
- जबकि 23% भाग जिसमें सिंधु, नर्मदा, तापी, माही व पेरियार नदियाँ शामिल हैं । अपना जल अरब सागर में गिराती हैं ।

भारत में अपवाह तंत्र

भारत के अपवाह तंत्र का नियंत्रण मुख्यतः भौगोलिक स्वरूप के द्वारा होता हैं ।

भारतीय नदियाँ का विभाजन

उद्गम एवं प्रकृति के आधार पर

हिमालयी या उत्तरी भारत का

प्रायद्वीपीय या दक्षिणी भारत का अपवाह तंत्र

अपवाह तंत्र

यद्यपि इस विभाजन योजना में चंबल, बेतवा, सोन आदि नदियों के वर्गीकरण में समस्या उत्पन्न होती हं । क्योंकि उत्पत्ति व आयु में ये हिमालय से निकलने वाली नदियों से पुरानी हैं । फिर भी यह अपवाह तंत्र के वर्गीकरण का सर्वमान्य आधार हैं ।

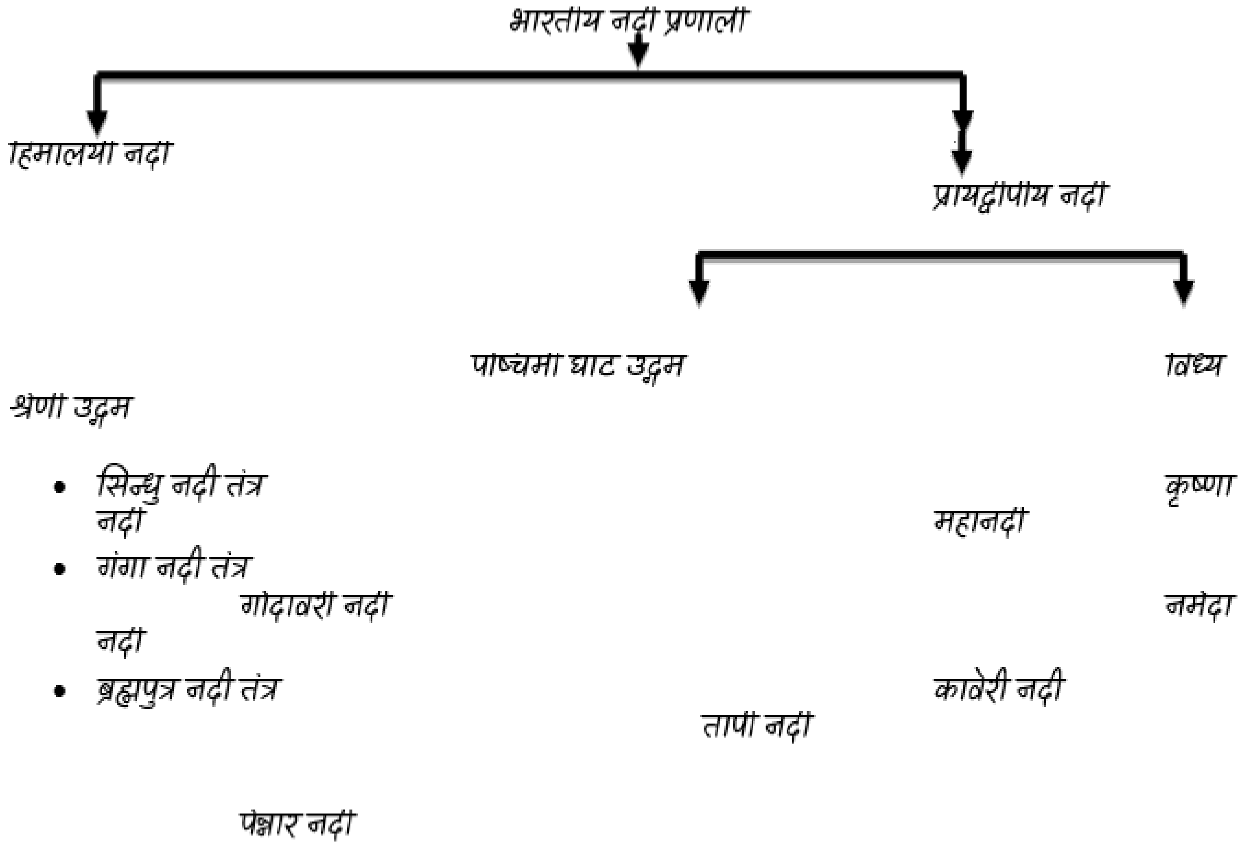

हिमालयी अपवाह तंत्र

उत्तर भारत के अपवाह तंत्र में हिमालय का अधिक महत्त्व हैं । ये नदियाँ तीव्र गति से अपनी घाटियों को गहरा कर रही हैं । उत्तरी भारत की नदियाँ अपरदन से प्राप्त मिट्टी को बहाकर ले जाती हैं तथा मैदानी भागों में जल प्रवाह की गति मंद पड़ने पर मैदानों और समुद्रों में जमा कर देती हैं । इन्ही नदियों द्वारा लायी गई मिट्टी से उत्तर भारत के विशाल मैदान का निर्माण हुआ है।

इंडो ब्रह्म नदी:- भू-वैज्ञानिक मानते है। कि, मायोसीन कल्प में लगभग 2.4 करोड़ से 50 लाखों वर्ष पहले एक विशाल नदी थी । जिसे शिवालिक या इंडो - ब्रह्मा नदी कहा गया हैं ।

इंडो ब्रह नदी के तीन मुख्य अपवाह तंत्र -

1.पश्चिम में सिन्धु और इसकी पाँच सहायक नदियाँ

2.मध्य में गंगा और हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ

3.पूर्व में ब्रह्मपुत्र का भाग व हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ :-

हिमालयी अपवाह तंत्र की नदियाँ

सिन्धु नदी तंत्र | गंगा नदी तंत्र | ब्रह्मपुत्र नदी

1. सिन्धु नदी तंत्र

सिन्धु जल संधि (1960)

तीन पूर्वी नदियों - व्यास, रावी, सतलज का नियंत्रण भारत तथा 3 पश्चिमी नदियों सिन्धु, झेलम, चेनाब का नियंत्रण पाकिस्तान को दिया गया -

1.व्यास, रावी, सतलुज — 80% पानी भारत

20% पानी पाकिस्तान

2.सिन्धु, झेलम, चिनाब — 80%पानीपाकिस्तान

20% पानी भारत

<u>सिंधु नदी तंत्र</u>

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

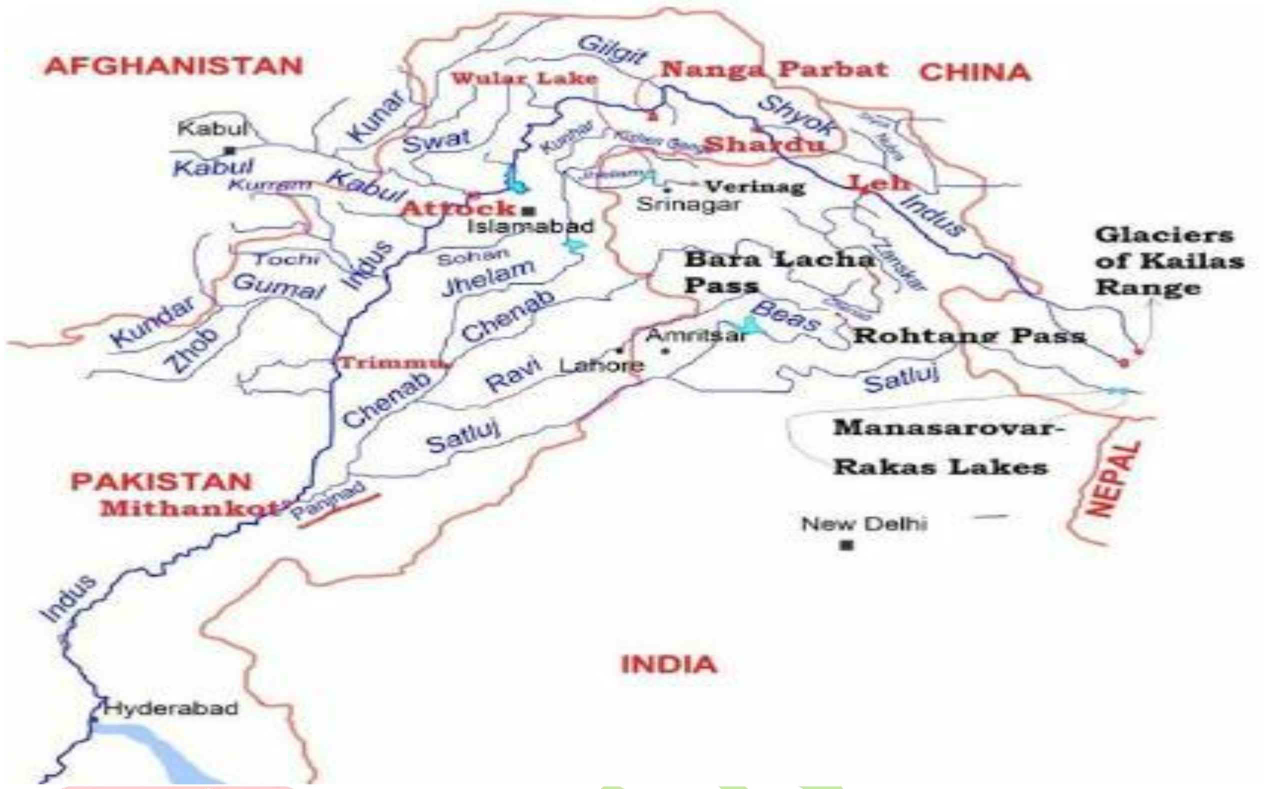

यह विश्व की सबसे बड़ी नदी श्रेणियों में से एक हैं, जिसका क्षेत्रफल 11 लाख, 65 हजार वर्ग km हैं । भारत में इसका क्षेत्रफल 3,21,289 वर्ग किमी हैं ।

- सिन्धु नदी की कुल लंबाई 2,880 किमी. हैं। परंतु भारत में इसकी ल. केवल 1,114 km हैं । भारत में यह हिमालय की नदियें में सबसे पश्चिम नदी हैं ।
- सिन्धु नदी का उद्गम तिब्बती क्षेत्र में कैलाश पर्वत श्रेणी (मानसरोवर झील) में बोखर-चू के निकट एक हिमनद से होता हैं, जो 4,164 मीटर उँचाई पर स्थित हैं । तिब्बत में इसे शेर मुख कहते हैं ।
- अंततः यह नदी अटक (पंजाब प्रांत, पाकिस्तान) के निकट पहाड़ियों से बाहर निकलती हैं । जहाँ दाहिने तट पर काबुल नदी इसमें मिलती हैं ।
- यह नदी दक्षिण की ओर बहती हुई मिठनकोट के निकट पंचनद का जल प्राप्त करती हैं । पंचनद नाम पंजाब की पाँच मुख्य नदियों सतलज, व्यास, रावी, चिनाब, झेलम को संयुक्त रूप से दिया गया हैं ।

- सिन्धु और ब्रह्मपुत्र नदियों का उद्गम स्थल तिब्बत का पठार हैं । तिब्बत के पठार से निकलने वाली अन्य नदियाँ - यांग्त्सी - क्यांग, जियांग, हंग-हो, पीत, पीली नदी इरावदी, मेकांग एवं सतलज ।
- जास्कर नदी का उद्गम हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर की सीमा पर सरचू के उच्च अक्षांशीय पठारी भाग से होता हैं । यह नदी जास्कर श्रेणी में गहरे गॉर्ज का निर्माण करती हैं। तथा कठोर चट्टानी भागो से होकर बहती हैं । यह पहले उत्तर फिर पूर्व की ओर बहते हुए नेमू के निकट सिन्धु नदी से मिल जाती हैं ।

➢ **सिंधु की प्रमुख सहायक नदियाँ : -**

1. सतलज नदी 2. व्यास नदी 3. रावी नदी
4. चिनाब नदी 5. झेलम नदी

1. सतलज नदी -

- यह एक पूर्ववर्ती नदी हैं जो तिब्बत में 4,555 मीटर की ऊँचाई पर मानसरोवर के निकट राकस ताल झील से निकलती हैं । जहाँ इसे लाँगचेन खंबाब के नाम से जाना जाता हैं ।
- यह उत्तर - पश्चिम दिशा में बहते हुए इंड़ो - तिब्बत सीमा के समीप शिपकील दर्रे के पास भारत में प्रवेश करने से पहले लगभग 400 km तक सिन्धु नदी के समान्तर बहती हैं ।
- यह हिमालय की श्रेणियों (महान हिमालय और जास्कर श्रेणी) को काटकर महाखड्ड का निर्माण करती हैं ।

2. व्यास नदी (विपाशा नदी)

- यह सिन्धु की एक अन्य महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं । रोहतांग दर्रे के निकट व्यास कुंड से निकलती हैं ।

- यह नदी कुल्ली घाटी से गुजरती हैं । तथा धौलाधर श्रेणी में काटी और लारजी में महाखण्ड़ का निर्माण करती हैं ।

3. रावी नदी (परूष्णी नदी या इरावती नदी)

- यह नदी सिंधु की महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं जो हिमालय की कुल्लु की पहाड़ियों में स्थित रोहतंग दर्रे के पश्चिम से निकलती हैं तथा चंबा घाटी से होकर बहती हैं ।

पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले व सराय सिंधु के निकट चिनाब नदी में मिलने से पहले ....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

अध्याय – 7

मृदा / मिट्टी

भारत के मृदा वर्गीकरण के दिशा में कहीं कार्य किये गए हैं/ जिनमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (ICAR) द्वारा 1956 में किया गया कार्य अधिक महत्त्वपूर्ण हैं / ICAR द्वारा संरचनात्मक मृदा और खनिज, मृदा के रंग व संसधानात्मक महत्त्व को ध्यान में रखते हुए भारत के मृदा को 8 भागों में विभाजित किया हैं/

मृदा के प्रकार

1. जलोढ़ मृदा (तराई मृदा , बांगर मृदा, खादर मृदा)
2. काली मृदा
3. लाल – पीली मृदा
4. लैटेराइट मृदा
5. पर्वतीय मृदा
6. मरुस्थलीय मृदा
7. लवणीय मृदा
8. पीट एवं जैव मृदा

मिट्टी के अध्ययन के विज्ञान को मृदा विज्ञान (पेडोलॉजी) कहा जाता हैं ।

1953 में केन्द्रीय मृदा संरक्षण बोर्ड का गठन किया गया ।

मृदा शब्द की उत्पति लैटिन भाषा के शब्द "सोलम" से हुई, जिसका अर्थ हैं - फर्श ।

मूल चट्टानों, जलवायु, भूमिगत उच्चावच, जीवों के व्यवहार तथा समय से मृदा अपने मूल स्वरूप में आती हैं अथवा प्रभावित होती हैं ।

मृदा में सबसे अधिक मात्रा में क्वार्टज खनिज पाया जाता हैं ।

ऐपेटाइट नामक खनिज से मृदा को सबसे अधिक मात्रा में फास्फोरस प्राप्त होता हैं ।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

वनस्पति मिट्टी में ह्युमस की मात्रा निर्धारित करती हैं ।

मृदा में सामान्यतः जल 25 प्रतिशत होता हैं ।

जलवायु मिट्टी में लवणीकरण, क्षारीयकरण, कैल्सीकरण, पाइजोलीकरण में सबसे महत्त्वपूर्ण कारक हैं ।

मृदा को जीवीत तंत्र की उपमा प्रदान की गई हैं ।

1.जलोढ़ मिट्टी –

- यह भारत में लगभग 15 लाख वर्ग कि.मी. (43.4%) क्षेत्र पर विस्तृत हैं ।
- इस मृदा का निर्माण नदियों द्वारा लाए गए तलछट के निक्षेपण से हुआ है / इस प्रकार यह एक अक्षेत्रीय मृदा है
- इस मृदा के दो प्रमुख क्षेत्र है –
- उत्तर क विशाल मैदान
- तटवर्ती मैदान
- जलोढ़ मृदा नदियों की घाटियों एवं डेल्टाई भाग में भी पाएँ जाते है
- ये नदियों द्वारा निर्मित मैदानी भाग में पंजाब से असम तक तथा नर्मदा, ताप्ती, महानदी, गोदावरी, कृष्णा व कावरी के तटवर्ती भागों में विस्तृत हैं ।
- यह मिट्टी उच्च भागों में अपरिपक्व तथा निम्न क्षेत्रों में परिपक्व हैं ।
- इनमें पोटाश व चुना प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, जबकि फास्फोरस, नाइट्रोजन व जीवांश का अभाव पाया जाता हैं ।
- यह उपजाऊ मृदा है

इस मृदा को तीन भागो में बाँटा जाता है-

1.तराई

मृदा

- इस मृदा में महीन कंकड़, रेत, चिकनी मृदा, छोटे – छोटे पत्थर आदि पाएँ जाते हैं
- इस मृदा में चट्टानी कणों के होने से जल ग्रहण की क्षमता अधिक होती है
- इस मृदा में चूने की मात्रा अधिक होती हैं
- यह गन्ने की कृषि के लिए उपयुक्त होता हैं
- 2.बांगर मृदा
- यह पुरानी जलोढ़ मृदा है यह मृदा सतलज एवं गंगा के मैदान के उपरी भाग तथा नदियों के मध्यवर्ती भाग में पाई जाती है
- यहाँ बाढ़ का पानी नही पहुचं पाता है
- इस मृदा में चीका एवं बालू की मात्रा लगभग बराबर होता है
- यह मृदा रबी के फसल के लिए उपयुक्त होता है

3.खादर मृदा

- यह नवीन जलोढ़ मृदा है यहाँ प्रत्येक वर्ष बाढ़ का पानी पहुँचने से नवीनीकरण होता रहता है
- यह मृदा खरीफ के फसल के लिए उपयुक्त होता है

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

2.लाल - पीली मिट्टी :-

- यह देश के लगभग 6.1 लाख वर्ग कि.मी. (18.6%) भू-भाग में हैं ।
- इस मिट्टी का विकास आर्कियन ग्रेनाइट, नीस तथा कुड़प्पा एवं विंध्यन बेसिनों तथा धारवाड़ शैलों की अवसादी शैलो के उपर हुआ हैं ।
  - इनका लाल रंग लौह ऑक्साइड़ की उपस्थिति के कारण हुआ हैं ।
  - यह मिट्टी आंशिक रूप से अम्लीय प्रकार ही होती हैं । इसमें लोहा, एल्युमिनियम तथा चूने का अंश कम होता हैं तथा जीवांश, नाइट्रोजन तथा फास्फोरस की कमी पाई जाती हैं ।
  - यह मृदा झारखण्ड के संथाल परगना अवाम छोटा नागपुर का पठार पश्चिम बंगाल के पठारी क्षेत्र तमिलनाडु कर्नाटक दक्षिण – पूर्व महाराष्ट्र पश्चिमी एवं दक्षिणी आंध्रप्रदेश

मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के अधिकांश भाग ओडिशा एवं उत्तर प्रदेश के झाँसी ललितपुर मिर्जापुर में पाई जाती है I

इस प्रकार के मृदा में मुख्यत : दलहन चावल एवं मोटे अनाज..........................

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है I इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा I यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद I

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (98 MARKS)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 of 160	

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें - 8233195718, 8504091672, 9694804063

FREE SAMPLE

अध्याय – 10

प्रमुख खनिज एवं ऊर्जा संसाधन

- दक्षिण अमेरिका में खनिजों का प्रमुख भंडार क्षेत्र पैंटागोनिया का पठार है ।
- प्रथ्वी के भू-गर्भ में सबसे अधिक निकेल(Ni) धातु पाई जाती है तथा उसके बाद लोहे (Fe) का स्थान है ।
- डोनबास क्षेत्र कोयले के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है ।
- जापान कोबाल्ट अयस्क के उत्पादन में आत्मनिर्भर है ।
- रुकवा झील क्षेत्र(तंज़ानिया) कोयला खनिज के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है ।
- अफ़्रीका का सर्वाधिक ताँबा उत्पादक देश जाम्बिया है ।
- हीरा(diamond) का सबसे बड़ा उत्पादक देश रूस है ।
- विश्व में चाँदी(sliver) का सबसे बड़ा उत्पादक देश मेक्सिको है ।
- विश्व में बोक्साइट(bauxite) का सबसे बड़ा उत्पादक देश ऑस्ट्रेलिया है ।
- विश्व में टाइटेनियम(titanium) का सबसे बड़ा उत्पादक देश चीन है ।
- विश्व में सबसे अधिक एलुमिनियम(aluminium) उत्पादक देश चीन है।
- जोहान्सबर्ग स्वर्ण खनन हेतु प्रसिद्ध है ।

प्रमुख खनिज उत्पादक शीर्ष राष्ट्र

खनिज	**शीर्ष उत्पादक राष्ट्र**
एल्युमिनियम	चीन ,रूस ,भारत
बोक्साइट	ऑस्ट्रेलिया,चीन ,गुयाना
क्रोमाइट	दक्षिण अफ़्रीका ,तुर्की ,कजाखस्तान
कोयला	चीन ,भारत ,सयुक्त राज्य अमेरिका

कोबोल्ट	कांगो प्र.गण.,कैलेडोनिया,चीन
ताबा	चिली ,पेरू ,चीन
हीरा	रूस , बोत्स्वाना,कनाडा
स्वर्ण	चीन ,ऑस्ट्रेलिया ,रूस
ग्रेफाइट	चीन ,भारत ,ब्राजील
जिप्सम	चीन ,ईरान ,थाईलेंड
लोह अयस्क	चीन ,ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील
जस्ता	चीन ,पेरू , ऑस्ट्रेलिया
मैंगज़ीन अयस्क	दक्षिण अफ्रीका ,चीन ,ऑस्ट्रेलिया
अभ्रक	ब्राजील ,चीन ,तुर्की
निकेल	कनाडा ,ऑस्ट्रेलिया , चीन
चाँदी	मेक्सिको ,पेरू ,चीन
टंग्स्टन	चीन ,वियतनाम ,रूस
सीसा	चीन ,ऑस्ट्रेलिया ,पेरू
प्लेटिनम	दक्षिण अफ्रीका ,रूस ,जिम्बाब्वे
मलिब्ड़ेनम	चीन ,सयुक्त राज्य अमेरिका ,चिली

- **थोरियम भंडारक शीर्ष राष्ट्र**

क्रम	भण्डारक राष्ट्र	भण्डार(टन में)
प्रथम	भारत	९63,000
द्वितीय	सयुक्त राज्य अमेरिका	५५0,000
तर्तीय	ऑस्ट्रेलिया	300,000

- **परमाणु ऊर्जा के दो मुख्य खनिज थोरियम और युरेनियम है।**

- **पेट्रोलियम के प्रमुख खनन केंद्र**

सं.रा. अमेरिका	अप्लेशियन क्षेत्र ,गल्फ तटीय क्षेत्र ,कैलीफोर्निया
सउदी अरब	दम्माम ,घावर व धहरान
कुवैत	बुरघान पहाड़ी(विश्व का व्हत्तम संचित भंडार
ईरान	लाली ,करमशाह ,नफ्त सफिद ,हप्त केल
पूर्व सोवियत संघ	वोल्गा-यूराल क्षेत्र ,बाकू क्षेत्र
इराक	किर्कुक ,मोसुल ,बसरा ,तिकरित

- पेट्रोलियम के निर्यातक की मात्रा के आधार पर देशों का अवरोही क्रम है – सउदी अरब ,रूस एवं ईराक
- बाकू क्षेत्र पेट्रोलियम उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।
-
- **कच्चे तेल के शीर्ष उत्पादक एवं भंडारक राष्ट्र**

क्र.स.	**उत्पादक राष्ट्र**	**भंडारक राष्ट्र**
प्रथम	सयुक्त राज्य अमेरिका	वेनेजुअला
द्वितीय	सउदी अरब	सऊदी अरब
तर्तीय	रूस	कनाडा

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

- विश्व का सबसे बड़ा प्रमाणित तेल भंडार (certified oil reserve) वेनेजुएला में स्थित है ।
- विश्व के तीन सबसे बड़े कच्चे तेल उत्पादकों देश है –संयुक्त राज्य अमेरिका ,सउदी अरब एवं रूस
- दक्षिण-पूर्वी एशिया का सबसे बड़ा खनिज तेल उत्पादक देश इंडोनेशिया है ।
- गैसोहाल(gasohol) का सबसे बड़ा उत्पादक एवं उपभोक्ता ब्राजील देश है ।

विश्व के शीर्ष 3 युरेनियम उत्पादक राष्ट्र

क्रम	उत्पादक राष्ट्र	उत्पादन(टनमें)
1	कजखसतान	23,800
2	कनाडा	13,325
3	ऑस्ट्रेलिया	5,672

- विश्व में युरेनियम के सर्वाधिक भंडार ऑस्ट्रेलिया में स्थित है ।
- युरेनियम के प्रमुख अयस्क है - युरेनिनाइट(पिच्ब्लेड),यूरेनाइट एवं थोरियेनाइट
- युरेनियम अयस्क निक्षेप के लिए कनाडा देश प्रसिद्ध है ।
- **पवन ऊर्जा की संभवित क्षमता वाले शीर्ष 4 राष्ट्र**

क्रम	राष्ट्र
1	चीन (33.6 %)
2	स.रा.अमेरिका(17.2%)
3	जर्मनी(10.4 %)
4	भारत (5.8 %)

- विश्व भर में परमाणु ऊर्जा के बाद गैर-पारम्परिक ऊर्जा का दूसरा सबसे बड़ा स्त्रोत पवन ऊर्जा है।

पर्याप्त उत्पादन के साथ आर्थिक महत्त्व वाले खनिज : लौह अयस्क, मैंगनीज, अभ्रक, कोयला, सोना, इल्मेनाइट, बॉक्साइट व भवन ....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 14

- **अन्य महत्त्वपूर्ण oneliner तथ्य**

भारत का भूगोलः -

1. पूर्वी तटीय मैदान का एक अन्य नाम कोरोमंडल तटीय मैदान है ।
2. भारतीय मानक समय 82.5° E रेखांश पर अपनाया जाता है ।
3. भारत का मानक समय ग्रीनविच माध्य समय से $5\frac{1}{2}$घंटे आगे है ।
4. भारत के दक्षिण छोर का नाम निकोबार द्वीप में स्थित इंदिरा पॉइंट है ।
5. भारत के दक्षिणी छोर को इंदिरा पॉइंट कहा जाता है ।
6. क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत संसार का सातवां सबसे बड़ा देश है ।
7. भारत का क्षेत्रफल, पाकिस्तान से लगभग चार गुना बड़ा है।
8. भारतीय उपमहाद्वीप मूलतः गोंडवानालैंड का एक अंग था ।
9. दक्षिण ध्रुव प्रदेश (अंटार्कटिका)में स्थित भारत के स्थायी अनुसंधान केंद्र का नाम दक्षिण गंगोत्री है।
10. हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले की सीमा चीन के साथ लगती है।
11. भारत का सबसे बड़ा संघ राज्य क्षेत्रअंडमान और निकोबार द्वीपसमूह है।
12. राज्यों अरूणाचल प्रदेश, असम और मणिपुर समूह के साथ नागालैंड की साझी सीमाएं हैं।
13. भारत के राजस्थान राज्य का क्षेत्रफल सबसे अधिक है।
14. आन्ध्र प्रदेश राज्य की तटरेखा सबसे लंबी है।
15. भारत की तटरेखा7500 किमी है।
16. लक्षद्वीप द्वीपसमूह अरब सागर में स्थित है।
17. लक्षद्वीप में 36 द्वीपसमूह हैं ।
18. अंडमाननिकोबार द्वीप में 'गद्दीदार चोटी' (सैंडिल पीक)उत्तरी अंडमानमें स्थित है।

19. पश्चिम बंगाल की सीमाएं तीन देशों के साथ लगती हैं।

20. आन्ध्रप्रदेश और तमिलनाडु के तटीय भू-भाग को कोरोमंडल कहते हैं।

21. केरल के तट को मालाबार तट कहते हैं।

22. भारत की सबसे लंबी सुरंग, जवाहर टनल जम्मू और कश्मीर राज्य में स्थित हैं।

23. 'स्मार्ट सिटी' कोचीन में स्थापित की जा रही है।

24. दीव एक द्वीप गुजरात से हट कर है।

25. "गुजरात तट से दूर जिस विवादास्पद तटीय पट्टी पर भारत और पाकिस्तान बातचीत कर रहे हैं, उसका नाम सर क्रीक है।

26. प्रस्तावित समुद्र मार्ग 'सेतुसमुद्रम' मन्नार की खाड़ी समुद्री वीथिकाओं (Sea-lanes) से गुजरने वाली नहर है।

27. भारत का पुडुचेरी संघ शासित प्रदेश ऐसा है, जिसमें चार जिले हैं, किंतु उसके किसी भी जिले की सीमा, उसके किसी अन्य जिले की सीमा से नहीं मिलती।

28. संघ राज्य क्षेत्र पुडुचेरी की सीमा कर्नाटक के साथ नहीं लगती हैं ।

29. झीलों के अध्ययन को लिम्नोलाजी कहते हैं।

30. जोजी-ला दर्रा श्रीनगर और लेह को जोड़ता है।

31. कुल्लू घाटी धोलाधर और पीर पंजाल के बीच स्थित है।

32. कुल्लू घाटी धोलाधर और पीर पंजाल पर्वतीय श्रेणियों "पर्वत मालाओं" के बीच स्थित है।

33. हिमाचल प्रदेश में स्थित दर्रा शिपकिला है।

34. माउंट एवरेस्ट को सागरमाथा भी कहते हैं।

35. हिमालय की सबसे पूर्वी चोटी नमचा बरवा है।

36. गोडविन आस्टिन एक शिखर है ।

37. भारत में सबसे ऊँची चोटी के-2 गोडविन आस्टिन है।

38. अरावली पर्वत हिमालयी श्रंखला का अंग नहीं है।

39. बृहत्तर (ग्रेटर) हिमालय का दूसरा नाम हिमाद्रि है।

40. नाग तीबा और महाभारत पर्वत मालाएं निम्न-हिमालय में शामिल हैं।
41. भारत में सबसे ऊँचा पठार लद्दाख पठार है।
42. प्रायद्वीप भारत में उच्चतम पर्वत चोटी अनाईमुडी है।
43. अनाईमुडी शिखर सह्याद्री में स्थित है।
44. पीर पंजाल पर्वत श्रेणी भारत में स्थित है।
45. पंचमढ़ी पर्वतीय स्थल को 'सतपुड़ा की रानी' कहते हैं।
46. लोकटक झील, जिस पर जलविद्युत परियोजना का निर्माण किया गया था, मणिपुर राज्य में स्थित है।
47. 'लोकटक' एक झील है ।
48. लोनार झील महाराष्ट्र में स्थित है।
49. सबसे बड़ी मानव निर्मित झील गोविंद सागर है।
50. नागा, खासी और गारो पहाड़ियां पूर्वांचल पर्वतमाला में स्थित हैं।
51. शिवसमुद्रम जलप्रपात कावेरी नदी के मार्ग में पाया जाता है।
52. शिवसमुद्रम कावेरी नदी द्वारा बनाया गया जलप्रपात है।
53. बलतोड़ा हिमनद कराकोरम पर्वतमाला में स्थित है।
54. भारत का सबसे ऊँचा जलप्रपात कर्नाटक राज्य में है।
55. सबसे ऊँचा भारतीय जलप्रपात गरसोप्पा है। जोग एक गैर पंकितबद्ध शब्द है/
56. ऊँचे क्षेत्रों में लेटेराइट मृदा की रचना अम्लीयहोती है।
57. पर्वतीय स्लोपों पर मृदा अपरदन को समोच्च रेखीय जुताई द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है।
58. भारतीय उत्तरी मैदानों की मृदा सामान्यतः तलोच्चन द्वारा बनी है।

कपास के उत्पादन के लिए ....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक**

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2 के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (98 MARKS)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150

FREE SAMPLE

RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 of 160	

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk8S6WI8&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

AVAILABLE ON/

www.infusionnotes.com 01414045784 contact@infusionnotes.com

OTHER EDITIONS...